जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 19 संख्याः 91 प्रभात जालोर, रविवार 7 जुलाई, 2024 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

काफी रोचक रहेगा जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव इस बार

भाजपा अपने घोषणा पत्र में वादा कर रही है कि, पाकिस्तान से पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) वापस लेगी

- श्रीनंद झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जम्मू व कश्मीर के आगामी विधान सभा चुनावों में भाजपा अपने चुनावी घोषणापत्र में पाकिस्तान के कब्जे वाले भाग "पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर" को "वापस अपने कब्जे" में लेने का वादा शामिल कर सकती है।

केन्द्र सरकार को लगता है सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित 30 सितम्बर की मियाद तक देश के उत्तरी राज्यों में चुनाव कराने के आदेश का सम्मान करने को तैयार है। पिछले साल 11 दिसम्बर को सुप्रीम कोर्ट ने देश के चुनाव को 30 सितम्बर 2024 तक चुनाव कराने का निर्देश दिया था। उम्मीद की जाती है कि चुनाव आयोग वर्तमान में चल रही अमरनाथ यात्रा के 19 अगस्त को समाप्त होने के बाद चुनावों की तारीखों का ऐलान करेगा।

- लग रहा है कि, भाजपा गंभीर है कि, सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अनुपालना में 30 सितम्बर से पहले जे. एण्ड के. में विधानसभा चुनाव संपूर्ण हो जायें।
- ऐसा लग रहा है कि, 19 अगस्त को अमरनाथ यात्रा पूरी हो जाने के बाद, चुनाव का कार्यक्रम घोषित कर दिया जायेगा। इस बार जे. एण्ड के. विधानसभा की सीटें बढ़ाकर 114 कर दी गईं, इनमें 24 सीटें पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) में हैं।
- चुनाव की तैयारी में जे. एण्ड के. के भाजपा के प्रभारी किशन रेड्डी और तरूण चुग ने रणनीति तैयार करने के लिये प्रदेशाध्यक्ष से मंत्रणा शुरु कर दी है तथा नड्डा भी श्रीनगर जा रहे हैं, प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में भाग लेने।
- पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती की हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में अनंतनाग-रजौरी में तथा उमर अब्बदुल्लाह की अपनी लोकसभा सीट पर पराजय से भाजपा काफी उत्साहित है।

कुछ समय पहले एक साक्षात्कार गृहमंत्री अमित शाह ने 30 सितम्बर तक इस वर्ष वादा किया था और चुनाव कराने का और इसके बाद राज्य का दर्जा बहाल करने का वादा किया था। वर्ष 2019 में, जम्मू व कश्मीर को दो भागों में बांट दिया गया था और इसको केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया था। अभी हाल ही में भाजपा की तरफ से जम्मू व कश्मीर में राजनीतिक गतिविधियों को तीव्र गति से बढ़ाया गया है। पार्टी के प्रदेश चुनाव प्रभारी जी. किशन रेड्डी व प्रभारी तरुण चुघ ने हाल ही में जम्मू में राज्य के भाजपा नेताओं के साथ चुनावी रणनीति को लेकर बैठक की थी।

इस बीच, भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा शनिवार को जम्मू के दौरे पर गए, जहां वे प्रदेश भाजपा की कार्यकारिणी समिति की बैठक को सम्बोधित करेंगे।

भाजपा जम्मू व कश्मीर में चुनावों से पूर्व कोई गठबंधन किए बगैर विधानसभा की 90 सीटों पर अपने दम पर अकेले चुनाव लड़ने की योजना बना रही है परन्तु संभावना है कि चुनावों के पश्चात "समान विचारधारा वाली पार्टियों" के साथ गठबंधन अस्तित्व में आ सकता है।

इस सप्ताह के पूर्वार्ध में, भाजपा के वरिष्ठ नेता जे.पी.नड्डा व अमित शाह ने प्रदेश इकाई के नेताओं के साथ पार्टी की चुनावी रणनीति पर चर्चा की थी और इसके साथ ही उन्हें चुनावों के लिए "तैयार रहने" का निर्देश दिया था। संयोगवश, राज्य की विधानसभा में सीटों की संख्या बढ़कर 114 हो गई है इनमें से 24 सीटें पाकिस्तान अधिकृत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

केन्द्रीय बजट 23 जुलाई को पेश होगा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए केंद्रीय बजट 23 जुलाई को लोकसभा में पेश किया जाएगा। वहीं संसद का बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित किया जाएगा। तारीखों की घोषणा संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने की।

रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत की माननीय राष्ट्रपति ने

- केन्द्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिये बताया कि बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित होगा।

भारत सरकार की सिफारिश पर बजट सत्र, 2024 के लिए संसद के दोनों सदनों को 22 जुलाई, 2024 से 12 अगस्त, 2024 तक बुलाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पूर्ण बजट पेश करेंगी। उन्होंने 1 फरवरी को संसद में अंतरिम बजट पेश किया गया था। लगातार दूसरे कार्यकाल के लिए केंद्रीय वित्त मंत्री के रूप में नियुक्त की गईं सीतारमण लगातार सात केंद्रीय बजट पेश करने वाली पहली शख्सियत बन जाएंगी। वह मोरारजी देसाई को पीछे छोड़ देंगी जिन्होंने लगातार छह बजट पेश किए थे। बता दें कि आम चुनाव 2024 के बाद 24 जून से संसद का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्यपाल व विधानसभा स्पीकर के बीच अहम् की लड़ाई हास्यास्पद स्थिति तक पहुंची

उपचुनाव जीतकर आए दो नये विधायकों को शपथ कौन दिलायेगा, इसका हल संविधान तथा विधानसभा की परम्पराओं के बीच लटकता रहा

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) और राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस के बीच चल रहा विवाद टी.एम.सी. के दो और विधायकों के शपथ ग्रहण के बाद आज और गहरा गया। राज्य विधानसभा के स्पीकर बिमान बनर्जी द्वारा सयंतिका बनर्जी और रेवात हुसैन सरकार को विधायक पद की शपथ दिलाने के बाद राज्यपाल ने सत्तारूढ़ पार्टी की आलोचना की।

सयंतिका बनर्जी और सरकार क्रमशः बड़ानगर और भगवानगोला निर्वाचन निर्वाचन क्षेत्रों से उपचुनाव जीते थे। इन उपचुनावों के नतीजे गत 5 जून को घोषित हुए थे। इनका शपथ ग्रहण तभी से लम्बित था, लेकिन सत्तारूढ़ तृणमूल और राज्यपाल कार्यालय के कारण इस पर सभी का फोकस था। स्पीकर बिमान बनर्जी ने अन्ततः उन्हें शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के बाद तृणमूल के

- मतगणना के बाद, रिज़ल्ट घोषित हो गया था, पर, राज्यपाल ने व्यवस्था दी कि दोनों नये विधायक उनके निवास पर आकर शपथ ग्रहण करें तथा शपथ दिलाने की जिम्मेवारी राज्यपाल ने डिप्टी स्पीकर को दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने राज्यपाल को नीचा दिखाने की दृष्टि से विधानसभा का विशेष सत्र आहूत कर स्वयं नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिला दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने दलील दी कि, विधानसभा केवल रूल्स से ही नहीं, संविधान के अनुसार चलती है।
- चर्चा है कि, शायद मामला सुप्रीम कोर्ट तक जाये।

विधायकों ने सदन में "जय बांग्ला" के नारे लगाए।

तथापि, उसके बाद राज्यपाल बोस ने कहा कि राज्यपाल के दफ्तर द्वारा उनके अधीनस्थ आशीष बनर्जी की नियुक्ति किए जाने के बावजूद स्पीकर ने शपथ दिलवाकर संवैधानिक प्रक्रिया का उल्लंघन किया है। फिर भी, आशीष बनर्जी ने यह उल्लेख कर ऐसा करने से इंकार किया कि स्पीकर द्वारा शपथ दिलाये जाने के पूर्व उदाहरण मौजूद हैं।

बोस ने कहा है कि "स्पीकर द्वारा दो नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाये जाने से हुई संवैधानिक अनीति को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को एक रिपोर्ट भेजी जाएगी।' बोस ने सोशल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को विदेश पढ़ने भेजेगी तेलंगाना सरकार

मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी ने अल्पसंख्यकों के लिए एक कल्याणकारी योजना घोषित की है

- लक्ष्मण वैंकट कुची -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। तेलंगाना में रेवन्त रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार अल्पसंख्यकों के लिये एक रूटीन कल्याणकारी योजना लेकर आई है जिसे लेकर विपक्षी भाजपा इसे "अल्पसंख्यक तुष्टीकरण" बताते हुये, जबरदस्त प्रहार कर सकती है। राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री की "ओवरसीज स्कॉलरशिप स्कीम" के तहत, अल्पसंख्यक विद्यार्थियों से विदेश में अध्ययन करने में सहयोग/सहायता के लिये आवेदन पत्र मांगे हैं। यह योजना के चन्द्रशेखर राव के नेतृत्व वाली तेलंगाना राष्ट्र समिति सरकार ने 2015 में आरम्भ की थी।

19 मई, 2015 को राज्य सरकार ने एक विस्तृत गवर्नमैंट ऑर्डर एमएस नं. 24 के तहत यह योजना शुरू की थी। इसका उद्देश्य विदेशों में उच्च अध्ययन के लिये अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को सहयोग देना था। यह योजना अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, कैनाडा, सिंगापुर,

- यह योजना मई 2015 में तात्कालीन मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने घोषित की थी जिसके तहत अल्पसंख्यकों को विदेशों में पढ़ने के लिए 20 लाख रूपए तक की सहायता दी जाती है।
- राज्य सरकार ने कहा है कि, छात्रवृत्ति के लिए 8 जुलाई से 7 अगस्त तक आवेदन किया जा सकेगा।
- राज्य सरकार के इस फैसले ने भाजपा को कांग्रेस पर "मुस्लिम तुष्टीकरण" का आरोप लगाने का मौका दे दिया है।

जर्मनी, दक्षिण कोरिया, जापान, फ्रांस तथा न्यूजीलैंड के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पोस्ट ग्रेजुएट तथा पी.एचडी. कोर्स करने में पात्र अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की मदद करती है। इस योजना के अन्तर्गत चयनित उम्मीदवारों को 20 लाख रुपए तक की छात्रवृत्ति या वास्तविक ट्यूशन फीस, जो भी कम हो, प्रदान किए जाते हैं।

राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी की है कि 'स्प्रिंग ऑफ 2024' के लिये आवेदन पत्र स्वीकार किए जायेंगे। अधिसूचना के अनुसार आवेदन खिड़की 8 जुलाई से 7 अगस्त तक खुली रहेगी तथा जिन पात्र विद्यार्थियों ने 1 जनवरी से 31 जुलाई के बीच प्रवेश सुनिश्चित कर लिया है, उन्हें आवेदन करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

वस्तुतः राज्य सरकार केवल अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों की ही मदद नहीं कर रही है, बल्कि विदेश

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका में आज़ादी के जश्न में गोलीबारी, 33 मरे

कैलिफॉर्निया, 6 जुलाई। अमेरिका में हर साल की तरह इस बार भी 4 जुलाई को लोगों ने अपने परिवार और दोस्तों के साथ आजादी का जश्न मनाया। इस दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में गोलीबारी और हिंसा की घटनाओं में 33 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा 11 लोग शिकागो में मारे गए।

- अमेरिका में चार जुलाई को आयोजित "इंडिपेंडेंस डे" समारोहों में देश भर में कई जगहों पर नागरिको द्वारा गोलियां चलाने की घटनाएं सामने आईं।

शिकागो सनटाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, शिकागो में गोलीबारी में 11 लोग मारे गए और 55 अन्य घायल हो गए। इसमें दो महिलाएं और एक 8 वर्षीय लडका शामिल है। उधर, कैलिफोर्निया के हंटिंगटन बीच में स्वतंत्रता दिवस पर आतिशबाजी शो खत्म होने के दो घंटे बाद एक हमले में दो लोग मारे गए। उधर, क्लीवलैंड में एक 10 वर्षीय लडकी की हत्या कर दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने के.सी.आर. को दिखाया "जैसी करनी वैसी भरनी"

तेलंगाना में पूर्व मुख्यमंत्री के.सी.आर. ने कांग्रेस के साथ जो किया अब रैवन्त रेड्डी बी.आर.एस. के साथ वही कर रहे हैं

- लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जानी-मानी कहावत है जैसी करनी वैसी भरनी। आप किसी के साथ जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही व्यवहार उससे बदले में पाओगे, और यह बात बिलकुल पक्की है खास तौर से राजनीति में।

तेलंगाना के पूर्व शक्तिशाली मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने जो व्यवहार पूर्व में कांग्रेस के साथ किया था आज वही उनको तकलीफ दे रहा है।

पिछले दस वर्षों से भी अधिक समय से उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को तोड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी और इस दल को तोड़कर एक छोटे से समूह में बदल दिया था और इस प्रकार विधानसभा में अपने विधायकों की संख्या बढ़ाकर राज किया तथा संसद के चुनावों में भी उनकी संख्या में वृद्धि हुई है। चुनावों में कांग्रेस के जो विधायक निर्वाचित हुए थे उन्हें कांग्रेस से तोड़कर अपनी पार्टी में शामिल कर लिया और एक बार स्थिति ऐसी बन गई मानों

- बी.आर.एस. के राज्यसभा सदस्य केशव राव एवं बी.आर.एस. के विधायकों को रैवन्त रेड्डी पहले ही कांग्रेस में शामिल कर चुके हैं और हाल ही में इसी पार्टी के दस विधान परिषद सदस्यों को भी रेड्डी ने कांग्रेस की सदस्यता दिलवाई है।
- बी.आर.एस. के वर्किंग प्रैसिडैंट के.टी. रामाराव ने इस दलबदल को लेकर कांग्रेस पर कटाक्ष किया कि, कांग्रेस ने अपने मैनिफैस्टो "न्याय पत्र" में दल-बदल रोकने के लिए संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन की बात कही है। क्या यही है कांग्रेस का न्याय पत्र?
- ज्ञातव्य है कि, जब के.सी.आर. मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने कांग्रेस के बहुत सारे नेताओं को तोड़ा, यहां तक कि, प्रदेश में कांग्रेस एक छोटा सा समूह बनकर रह गई थी। राज्य में दो ही पार्टियाँ बची थीं सत्तारूढ़ बी.आर.एस. और विपक्षी भाजपा।
- पर, जैसे ही रैवन्त रेड्डी ने तेलंगाना में कांग्रेस की कमान संभाली तो हालात बदलने लगे। वे एक-एक कर न केवल कांग्रेसियों को वापस लाए बल्कि मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने बी.आर.एस. में भारी तोड़-फोड़ मचा दी है।

तेलंगाना प्रदेश में केवल दो ही पार्टियां रह गई हों।

सत्ताधारी बी.आर.एस. तथा अपने को मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में पेश कर रही भाजपा और कांग्रेस के लोग बी.आर.एस. व भाजपा में चले गए थे।

जब तक रैवन्त रेड्डी ने कांग्रेस की कमान नहीं संभाली थी यही स्थिति थी। रेड्डी ने कांग्रेस के अध्यक्ष बनते ही पार्टी का पुनर्गठन करना शुरू कर दिया और अपनी पार्टी के पुराने साथियों को वापस पार्टी में लाना शुरू कर दिया।

के.सी.आर. को प्रदेश की सत्ता से बाहर करने के बाद, रेवन्त रेड्डी ने चुपचाप पार्टी के पुराने सहयोगियों को मनाकर वापस लाने का कार्यक्रम शुरू किया और अब वे बी.आर.एस. के नेताओं को तोड़ रहे हैं। बी.आर.एस. के एक वरिष्ठ नेता के. केशव राव के पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कश्मीर में दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गये

श्रीनगर, 6 जुलाई (वार्ता) जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में शनिवार को दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए और एक सैनिक शहीद हो गया।

- यह मुठभेड़ ऐसे समय पर हुई है जब कश्मीर में अमरनाथ यात्रा चल रही है। मुठभेड़ में एक भारतीय सैनिक शहीद हो गया।

अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कुलगाम में दो मुठभेड़ें ऐसे समय में हुई हैं जब अनंतनाग जिले में नुनवान-पहलगाम मार्ग और गंदेरबल जिले में बालटाल मार्ग से पिछले शनिवार को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा के कारण पूरे जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। दोनों मार्गों से तीर्थयात्रियों को कुलगाम जिले से होकर गुजरना पड़ता है। अधिकारियों ने बताया कि पहली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों रु. का घोटाला करने का आरोप लगाया डॉ. किरोड़ीलाल ने

डॉ. मीणा ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला देते हुए मु.मंत्री भजनलाल को गत 16 मई 2024 को लिखित शिकायत करते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की थी

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 6 जुलाई। कैबिनेट मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में राजस्थान राज्य भंडारण निगम द्वारा कल्पतरू समूह की कंपनी श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. को टैंडर देने की आड़ में अरबों रुपये का घोटाला करने का आरोप लगाया है।

डॉ. किरोड़ीलाल ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. की रिपोर्ट का हवाला देते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को गत 16 मई 2024 को शिकायती पत्र लिखते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की।

राजनैतिक गलियारों में डॉ. किरोड़ीलाल मीणा द्वारा अचानक इस्तीफा देने को लेकर अलग-अलग चर्चाएं हैं। चर्चाएं यह भी हैं कि, मंत्री किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए दिया है, कि पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में हुए अरबों रुपये के घोटाले उजागर करने के बाद भी मौजूदा भाजपा सरकार इस पर कोई सख्त एक्शन नहीं ले रही है।

दूसरी चर्चा यह भी है कि, डॉ. किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए भी दिया है कि, उनके प्रभाव क्षेत्र में भाजपा ने लोकसभा चुनाव-2024 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। किरोड़ीलाल स्वयं भी चुनाव के दौरान व बाद में भी कई बार कह चुके थे कि, अगर उनके क्षेत्र से भाजपा ने जीत दर्ज नहीं की तो वह मंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे।

- किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था। तथापि, शर्तों की पालना नहीं करने के बावजूद कंपनी से 120 करोड़ रु. की पैनल्टी नहीं वसूली गई।
- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में भी भंडारण निगम के अधिकारियों द्वारा इन दोनों कंपनियों पर मेहरबानी दिखाने और उन्हें करोड़ों रु. का फायदा पहुंचाने की बात कही गई है, जिससे किरोड़ीलाल के आरोप सत्यापति होते हैं। लेखाकारों ने बैंक गारंटी, कंपनी से पैनल्टी वसूली व अन्य प्रकरणों को लेकर जब विभाग से जवाब मांगा तो हर बार असंतोषजनक जवाब पाया।
- ऑडिट रिपोर्ट में ऑडिटर्स ने कई गंभीर गलतियां पकड़ीं, जिसमें श्री शुभम लॉजिस्टिक व ऑरिगो कंपनी को नाजायज लाभ पहुंचाने का प्रयास स्पष्ट हुआ है। स्टेट वेयर हाऊसिंग कॉर्पोरेशन इन आपत्तियों में से एक का भी संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया।

परन्तु इस घटनाक्रम के बीच, किरोड़ीलाल ने पिछली सरकार के जो घोटाले उजागर करने का दावा किया था, क्या वह पूर्णतः काल्पनिक थे अथवा उनमें कोई बड़ी सच्चाई थी?

किरोड़ीलाल मीणा ने गत 16 मई 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को जो पत्र लिखा था, उसमें 21 जनवरी 2024 को वरिष्ठ उपलेखाकार संजीव सुराणा की ओर से राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला दिया था। किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, इस रिपोर्ट के मुताबिक, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था।

इस अनुबंध के मुताबिक गोदामों की वार्षिक उपयोगिता 70 प्रतिशत से कम रहने पर नुकसान की भरपाई इन दोनों कंपनियों से की जानी थी। किरोड़ीलाल का कहना है कि, वर्ष 2023-24 में डिफैक्ट की यह रकम करीब 120 करोड़ रु. वसूली जानी है। इसके बावजूद भंडारण निगम ने यह वसूली कंपनी से नहीं की, उल्टा श्री शुभम लॉजिस्टक कंपनी ने राजस्थान सरकार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में परिवाद दायर कर दिया और अब कुछ अधिकारी अदालत में राज्य सरकार के पक्ष में कमजोर पैरवी कर रहे हैं।

किरोड़ीलाल मीणा का आरोप था कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के मुताबिक कंपनी द्वारा किराये पर लिए जाने वाले गोदाम भी भंडारण निगम के माने जाएंगे, इससे निगम को किराये की 70 फीसदी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता,
तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।
–खलील जिब्रान

आयुर्वेद के रसायन मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुनः आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7–8): चिकित्स्यमानः सम्यक च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुषः।। निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति।। जानी–मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर–उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7–8): विज्ञातं बहुशः सिद्धं विधिवच्चावचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्।। आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूपकल्पितम्। यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्।। बात यहाँ अति–कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5): न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादृते। मरणं चापि तन्नास्ति यन्नारिष्टपुरःसरम्।। किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6): मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्।। कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकल कर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुंचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला–पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान–पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट–निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति–व्यपाश्रय, सत्त्वावजय और दैव–व्यपाश्रय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक–महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5): ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलैः। रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निवार्य्यते।। कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3): ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्। रसायनाद्विना वत्स तान् शृण्वेकमना मम।। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालाँकि कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12): एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की टीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षि अगस्त्य को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.): रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभिः। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरैः।। तीसरा प्रमाण महर्षि–वैज्ञानिकआचार्य चरक द्वारा सोसायटल कोलैप्स या जनपदोध्वंश की स्थिति–हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियाँ–में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13–14): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुद्धतैः।। रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव–व्यपाश्रय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उम्रवर्धक हैं (अ.हृ.शा.3.120): दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः। रसायनानि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गणः।।

आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है।

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष–नियामकता पर ठोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र–आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए.कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे कैंसर, न्येरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट–फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसीलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45–60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधाा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाड़ियों के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरेस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियों तथा अपर–रेस्पायरेटरी–ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण–आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी–एंग्जाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी–डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिक्षमत्व बढ़ता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साइंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29: भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्यपाश्रय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य–असाध्य या अरिष्ट की जाँच–परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा–व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

मौसम की मार से प्याज-टमाटर सहित कई सब्जियों के भाव बढ़े

प्याज-टमाटर ही नहीं आलू भी कर रहा आम आदमी की जेब ढीली

- हरी सब्जियां आम आदमी की थाली से दूर होती जा रही है
- सब्जियों के दाम में बढ़ोतरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ा

मौसम की मार से सब्जियों के दामों बढ़ोतरी होने लगी है।

अजमेर, (कासं)। प्रदेश में मानसून का आगमन हो चुका है, ऐसे में प्याज–टमाटर समेत कई सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। मंडी से लेकर खुदरा बाजार तक के दाम में बड़ा असर देखने को मिल रहा है। इस महंगाई की रेस में आलू भी पीछे नहीं है। आलू का दाम 32 से 35 पहुंच गया है। बारिश के कारण किसानों की फसल प्रभावित हुई है। सब्जियों के दामों में भारी उछाल के चलते आम जनता के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई हैं। प्याज–टमाटर ही नहीं अब आलू भी आम आदमी की जेब ढीली कर रहा है, सब्जियों के भाव बढ़ने से अब वे आम आदमी की थाली से हरी सब्जियां दूर होती जा रही हैं।

टमाटर के साथ आलू की कीमते चर्चा में:–मानसून के साथ ही प्याज–टमाटर सहित सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। इस बार टमाटर की कीमतें सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। बाजार में टमाटर का भाव 80 रुपए तो वहीं प्याज की 50 रुपए प्रति किलो मिल रही है, इसके साथ ही आलू जो हर परिवार की थाली का मुख्य हिस्सा होता है, आलू के दाम 40 रुपए प्रति किलो पहुंचने के साथ ही सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ गया है। आम आदमी के लिए 40 रुपए प्रति किलो कीमत पर आलू खरीदना भी मुश्किल हो गया है। वहीं हरी सब्जियों के दामों में भी भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है, गंवार फली 160 रुपए प्रति किलो और भिंडी 50 रुपए प्रति किलो, बैंगन 80 रुपए, फूल गोभी 80 रुपए, टिंडे 100 रुपए, तुरई 80 रुपए पहुंच गई है।

दाम बढते से घरेलू बजट पर असर:–सब्जी की कीमतों में बढ़ोतरी से आम उपभोक्ता के बजट से बाहर होने से घरेलू बजट बिगड़ रहा है। किसानों और व्यापारियों का कहना है कि मानसून के कारण सब्जियों की फसल को नुकसान पहुंचा है जिससे उनकी आपूर्ति में कमी आई है। इसके साथ ही परिवहन और भंडारण की लागत भी बढ़ गई है जो कीमतों में वृद्धि का एक अन्य कारण है। इस महंगाई के चलते आम आदमी की परेशानी बढ़ गई है। महिलाओं को घर के बजट में संतुलन बनाना मुश्किल हो रहा है।

मौसम की मार:–पानी लगने की वजह से प्याज अब दागी हो रहा है, जिससे किसानों को ट्रालियां तक यूं ही फैंकनी पड़ रही है। दूसरी ओर आलू की बात करें तो अब की बार पैदावार कम हुई है जिसके चलते दाम बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर मंडी में की जाने वाली खरीद और खुदरा बाजार के दाम में भी अंतर होने के कारण आमजन काफी प्रभावित है। दरअसल, बदले हुए मौसम की वजह से सिर्फ टमाटर, आलू प्याज ही महंगा नहीं बिक रहा है, अन्य सब्जियों की कीमत भी आसमान छूने लगी है। ऐसे में मंडी में खरीद के लिए पहुंचने वाले लोग दाम पूछने के बाद खरीद से पीछे हट रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था के स्तर पर खरीद बजट से बाहर हो रही है।

शिक्षा का मानवता, देश और समाज के कल्याण के लिए अधिकाधिक उपयोग हो : राज्यपाल

- राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने उपाधियां प्रदान की।

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने की तथा सम्मानित अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सभापति प्रोफेसर टीजी सीताराम उपस्थित थे।

इस अवसर पर राज्यपाल मिश्र ने संविधान के मूल कर्तव्यों का वाचन कर समारोह की शुरुआत की एवं उन्होंने 127 विद्यार्थियों को डिग्रीयां एवं 44 स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी पदक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव धीरज सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नए जीवन का आरम्भ है। यह वह समय है जब आप विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करने के लिए सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों नें जो शिक्षा विश्वविद्यालय में प्राप्त की है, उसका मानवता के कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान निर्मित कराने की मंशा यही है कि हम संविधान की उदात्त परम्पराओं से सदा जुड़े रहें। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा अपनी स्थापना के बाद से ही देश में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभा रहा है। तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके लिए हमें विश्वविद्यालयों को इस तरह से तैयार करने की जरूरत है कि वहां नित्य नवीन ज्ञान का प्रसार हो ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से भारत को फिर से विश्वगुरु बन सके। विगत वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को देश–विदेश में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए हैं।

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि देश की जो नई शिक्षा नीति बनी है, उसका मूल भी यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो। इसीलिए शिक्षा नीति में युवाओं को कौशल विकास से जोड़े जाने पर विशेष जोर दिया गया है। विश्वविद्यालयों गुणवत्ता और नवाचार पर लगातार ध्यान केंद्रित करना होगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति मेें बदलना है।

समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के विभिन्न सम्बद्ध महाविद्यालयों के निदेशक, प्राचार्य, विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं विद्या परिषद के सदस्य, अन्य विश्विद्यालयों के कुलपति, राजभवन से अधिकारीं, विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष, कुलसचिव, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी, संकाय सदस्य, शिक्षक, शिक्षाविद्, विद्यार्थी व उनके अभिभावक, प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं आमंत्रित विशिष्ठ अतिथिगणों ने शिरकत की।

सरकारी स्कूलों में लगे प्रबोधक का होगा प्रमोशन

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा के अधीन कार्यरत 2449 प्रबोधकों को जल्दी ही वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत करने की तैयारी शिक्षा विभाग ने कर ली है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) को उनके जिले में पदोन्नति के पात्र प्रबोधकों की संख्या भेजते हुए उनकी अस्थाई वरिष्ठता सूची 10 जुलाई तक अद्यतन करने के निर्देश दिए हैं।

इस अस्थाई सूची पर 3 दिवस में संबंधित प्रबोधकों से आपत्तियां मांगने के बाद 15 जुलाई तक स्थाई वरीयता सूची जारी कर दी जाएगी। 20 जुलाई तक चयन संबंधी कार्यवाही पूरी कर चयन आदेश की हार्ड और सॉफ्ट कॉपी 22 जुलाई तक प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय को वाहक स्तर पर भेजने के निर्देश दिए गए हैं।

पूरे राज्य में कुल 10392 प्रबोधक वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नति के पात्र हैं, जिसमे से वर्ष 2021 में पदोन्नत करने के लिए 5 हजार पद स्वीकृत किए गए थे। शेष रहे 5392 में से अब 2449 पदों पर पदोन्नति की स्वीकृति सरकार ने दी है। जिन नवगठित जिलों में जिला स्थापना समिति का गठन नहीं हुआ है, उन जिलों में पूर्व 33 जिलों के अनुसार ही वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी। जिले में कुल 254 प्रबोधक पदोन्नति के पात्र थे, जिसमें से 122 को वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत किया जा चुका है। शेष 132 प्रबोधकों में से 60 प्रबोधकों को वरिष्ठता के आधार इस बार पदोन्नत किया जाएगा।

राशिफल रविवार 7 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हर्षण योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मेष, बुध–कर्क, गुरू–वृष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज राजयोग और रविपुष्य योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। आज शुक्र उदय पश्चिम रात्रि 9:05 पर होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, मनोरथ द्वितीया व्रत, आषाढ़ी दशहरा और रथयात्रा उत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:24 से 9:07 तक, लाभ–अमृत 9:07 से 12:21 तक, शुभ 2:13 से 3:56 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

मेष
घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये–पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मीन
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

पाली शहर में इस्कॉन 12 जुलाई को रथ यात्रा निकालेगा

पाली, (नि.सं.)। अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ इस्कॉन की ओर से शनिवार को बापू नगर विस्तार अमरनाथ नगर स्थित इस्कॉन मंदिर में प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया।

मंदिर के अध्यक्ष कार्तिक कृष्ण दास ने बताया कि पाली शहर में पहली बार इस्कॉन की ओर से पूरे देश की तरह यहां भी भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा 12 जुलाई को दोपहर 3:00 बजे अग्रसेन भवन से रवाना होकर पानी दरवाजा, सराफा बाजार, सोमनाथ मंदिर, सूरजपोल, शिवाजी सर्कल होते हुए अमरनाथ नगर स्थित इस्कॉन मंदिर पहुंच समाप्त होगी। उसके बाद सभी यात्रा में शामिल लोगों के लिए प्रसादी होगी। कार्यक्रम की तैयारी में कुलदीप शर्मा, सुरेंद्र पाटनेचा, दुर्गेश शर्मा अभिलाष साईं लगे हुए है। इस्कॉन मंदिर की स्थापना पाली में 2022 में हुई और भगवान का विग्रह 2023 में विराजमान किया गया। हर रविवार को आरती के प्रसाद भंडारा होता है। शनिवार को कीर्तन यात्रा, राधा अष्टमी, जन्माष्टमी आदि पर्व बनाए जाते हैं। इस्कॉन का उद्देश्य पूरे देश में गीता भागवत का प्रचार करना, पूरे विश्व में 6000 केंद्र है। सभी केंद्रों के हर साल ऑडिट होती है। लोगों में भ्रांति है कि इसका विदेश संस्था उसका पैसा विदेश जाता है यह गलत है। सभी शहर मैं वहां का पैसा वही केंद्र में लगता है। भारतीय मूल के श्रील प्रभु पद महाराज ने अमेरिका में 1966 में इसकी स्थापना की थी और कृष्ण भक्ति पूरे विश्व में जागी। पाली में भी 1935 तक मंदिर, गौशाला भवन आदि तैयार हो जाएगा। पाली में करीब 1000 सदस्य हैं। हर रविवार को एकत्रित आरती प्रार्थना में भाग लेते हैं।

पाली में अमरनाथ नगर स्थित इस्कॉन मंदिर में प्रेस वार्ता का आयोजन किया। फोटो-राष्ट्रदूत

वाहन चालक को बुलाकर गाड़ी लूटी

जोधपुर, (कासं)। बैजनाथ मंदिर रोड पर एक गाड़ी चालक से लूट हो गई। बदमाशों ने उसे मथानिया मशीनें और कूलर पहुंचाने के नाम पर बुलाया और फिर गाड़ी लूट कर ले गए। ट्रक चालक ने अब सूरसागर थाने में एक व्यक्ति को नामजद करते हुए केस दर्ज करवाया है।

खेड़ापा के बावड़ी स्थित डवोलो का बास निवासी शफी खां पुत्र हाजी खां ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि वह मुकेश नायक के लिए गाड़ी चलाता है। 2 जुलाई को वह गाड़ी लेकर बीकानेर से मंडोर मंडी पहुंचा था। बाद में वहां से होते हुए सूरसागर में एक होटल पर चाय पी रहा था। तब किसी शख्स ने कॉल कर कहा कि उसे दो मशीनें और एक कूलर मथानिया के कोटड़ा गांव लेकर चलना है। इस पर चार हजार रूपए में किराया तय किया गया। इसके बाद शफी खां गाड़ी लेकर मंडलनाथ कालीबेरी होते हुए निकला तब सामने वाले शख्स ने उसे बैजनाथ मंदिर रोड पर बुलाया।

वहां पहुंचने पर पहले से ही एक बाइक पर तीन युवक मिले। जिनसे बात कर रहा था तब इतने में बुधाराम नाम का शख्स आया और गाड़ी की सीट पर बैठा और उसे उतारते हुए कहा कि यह गाड़ी उसकी है। गाड़ी में रखा थैला और अन्य सामान बाहर फेंक दिया। फिर गाड़ी लेकर भाग गया। बाइक पर आए तीनों युवक भी वहां से भाग निकले। शफी खां ने अपने मालिक मुकेश नायक को कॉल कर बुलाया। मामले को लेकर पुलिस कंट्रोल रूम में भी सूचना दी गई। मगर गाड़ी और बदमाश का कहीं पता नहीं लगा।

शफी खां ने अपने मालिक मुकेश नायक के साथ जाकर सूरसागर थाने में गाड़ी लूट का प्रकरण दर्ज करवाया।

शिक्षा के क्षेत्र में भामाशाहों का योगदान अतुलनीय : गर्ग

लेटा में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में नवनिर्मित कक्षा कक्षों का उदघाटन मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने किया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। राजस्थान कक्षा-कक्षों के निर्माण को प्रशंसनीय संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने शनिवार को राउमावि लेटा में भामाशाह के सहयोग से नवनिर्मित कक्षा-कक्षों का विधिवत् रूप से फीता काटकर उद्घाटन किया।

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में भामाशाहों का अतुलनीय है। उन्होंने स्थानीय भामाशाह मांगीलाल द्वारा अपने पुत्र की स्मृति में लगभग 8 लाख की लागत से बताते हुए सभी के लिए प्रेरणादायी बताया। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण महाभियान के तहत ग्रामीणों से अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर उनकी देखभाल करने का आव्हान किया। उन्होंने विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के माध्यम से पेड़ लगाकर प्रकृति के प्रति प्रेम व संरक्षण की भावना विकसित करने की बात कही। जिला प्रमुख राजेश कुमार व जिला शिक्षाधिकारी माध्यमिक भैराराम चौधरी ने भी कार्यक्रम को मुख्य सचेतक ने कक्षा-कक्ष निर्माण पर भामाशाह मांगीलाल एवं फर्नीचर के लिए भामाशाह वेलाराम का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया।

इस अवसर पर महंत विष्णुभारती, गोकुल भारती, जालोर प्रधान नारायणसिंह राजपुरोहित, पंचायत समिति सदस्य छगनाराम माली, लेटा सरपंच शान्ति देवी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि व विद्यार्थी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

महिला क्रिकेट प्रति. आयोजित

पाली में सिखवाल ब्राह्मण सेवा समिति की महिला क्रिकेट प्रतियोगिता हुई। फोटो-राष्ट्रदूत

पाली, (नि.सं.)। पाली में सिखवाल ब्राह्मण सेवा समिति की ओर से एक दिवसीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मीडिया प्रभारी पवन पांडे ने बताया की तिलक नगर स्थित सिखवाल ब्राह्मण समाज भवन में गुरु पूर्णिमा महोत्सव को लेकर सिखवाल ब्राह्मण सेवा समिति की ओर से कई आयोजन करवाए जाएंगे। खेल कूद मंत्री चेतन ओझा ओर विवेक तिवारी ने बताया कि एक दिवसीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता में महिलाओं द्वारा बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

पहला मैच ज्योति उपाध्याय और अनपूर्णा नागला के बीच खेला गया जिसमें अनपूर्णा नागला की टीम विजेता रही। फाइनल मैच रेखा व्यास ओर सुमन व्यास के बीच खेला गया जिसमें रेखा व्यास की टीम विजय रही। सिखवाल ब्राह्मण महिला मंडल अध्यक्ष रेखा व्यास, ज्योति उपाध्याय,सरला ओझा, अनपूर्णा नागला,सुमन व्यास,ललिता उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

मुख्य सचेतक को ज्ञापन दिया

जालोर, (कासं)। मंत्रालयिक कर्मचारी शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ जालोर बैनर तले मंत्रालयिक कर्मचारी का वरिष्ठ सहायक से सहायक प्रशासनिक अधिकारी पाली संभाग की पदोनति में जालोर के मंत्रालयिक कर्मचारियों को जिले में रिक्त पद होने के उपरांत भी दूसरे जिले और 150 से 300 किलोमीटर दूर पदस्थापन पर मंत्रालयिक कर्मचारियों ने मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन देकर बताया कि मंत्रालयिक कर्मचारियों के पद पदस्थापन आदेशों में संशोधन करने और पदस्थापन काउंसलिंग के माध्यम से करने की मांग की । कर्मचारी गृह जिले से दूर और 300 किलोमीटर दूरी के कारण बहुत आहत हुए हैं। संशोधन नही होने पर कई कर्मचारी पदोनती का परित्याग का निर्णय लेंगे। ज्ञापन में जालोर जिलाध्यक्ष सुनीता गुर्जर ,सचिव आमिर खान आहोर ब्लॉक अध्यक्ष गुलाब माली, दिनेश भट्ट, राकेश, रमेश माली,धीरज खत्री कैलाश कुमार बागरा, आदाराम, हीरालाल, शक्ति प्रकाश , कैलाश कुमार, राजम अली,महिपाल सिंह गुर्जर सहित कई जने मौजूद रहे।

हरियालो राजस्थान अभियान के तहत गणेश महिला मंडल ने लखोटिया उद्यान में जामुन का पौधा लगाया। सचिव प्रकाश कंवर, अध्यक्ष भाग्यवंती गहलोत, विजयलक्ष्मी, सिंधु कंवर, मोहन कंवर, कमला सोलंकी, सोनर, स्नेह लता, भावना, सावित्री, कुसुमलता, मंजू, इंदू कंवर, अंजु, शांति आदि महिलाओं का सहयोग रहा। फोटो-राष्ट्रदूत

उपकोष कार्यालय में पौधारोपण

बालोतरा, (निसं)। राज्य सरकार के सघन पौधरोपण अभियान के तहत शु वार को उपखंड अधिकारी सुरेंद्र सिंह खंगारोत ने उपकोष कार्यालय परिसर में पौधारोपण किया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार इस अवसर पर उपखंड अधिकारी सुरेंद्र सिंह खंगारोत ने सिवाना उपखंड क्षेत्र पर आमजन से अधिक से अधिक पौधारोपण की अपील करते हुए कहा कि सभी नागरिक अपने घर आंगन में एक पौधा अवश्य लगाए। साथ ही उसकी सुरक्षा के करें ताकि भविष्य में वही पौधा वृक्ष बनकर छाया दे सके। सुखी मानव जीवन के लिए प्रकृति के साथ सामंजस्य जरूरी है।

बताया कि बढते तापमान और हीट वेव के प्रभाव को कम करने के लिए हमे अपने क्षेत्र में बडी संख्या में पौधारोपण करने की आवश्यकता है।

इस दौरान अतिरिक्त कोष अधिकारी अनिल कुमार, लेखाकार भरत कुमार, चेतन शर्मा, रामदयाल समेत उपकोष कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे।

यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी को परिवादी को राशि अदा करने के आदेश

जोधपुर, (कासं) । राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में यह व्यवस्था दी है कि वाहन बीमा पॉलिसी में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि खुले स्थल पर ताला लगे हुए वाहन की सुरक्षा के वास्ते बीमाधारी किसी व्यक्ति को वहां रखे।

> ■ राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में यह व्यवस्था दी है कि वाहन बीमा पॉलिसी में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि खुले स्थल पर ताला लगे हुए वाहन की सुरक्षा के वास्ते बीमाधारी किसी व्यक्ति को वहां रखे

आयोग के अध्यक्ष देवेंद्र कच्छवाहा, न्यायिक सदस्य अतुल कुमार चटर्जी और सदस्य लियाकत अली ने अपील मंजूर करते हुए यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी को निर्देश दिए कि चोरी हुए वाहन की कीमत तीन लाख रुपए मय एक अप्रैल 2021 से 9 फीसदी ब्याज और परिवाद व्यय बीस हजार रुपए परिवादी को अदा करें।

उन्होंने अधीनस्थ जिला उपभोक्ता आयोग को हिदायत दी है कि किसी भी पक्षकार को परिवाद,जवाब,प्रार्थना पत्र या शपथ पत्र हरे कागज में ही पेश करने के वास्ते बाध्य नहीं करें।

सुखाराम और प्रेम इन्वेस्टमेंट ने अधिवक्ता अनिल भंडारी के माध्यम से अपील पेश कर कहा कि 6 मार्च 2016 को एमडीएम अस्पताल के बाहर ताला लगे हुए बीमित वाहन की चोरी का दावा देय नहीं किए जाने पर दायर परिवाद को जिला उपभोक्ता आयोग ने यह कहकर खारिज कर दिया है वाहन चोरी की प्रथम सूचना रपट अत्यधिक देरी से दायर की गई है और वाहन को अस्पताल की पार्किंग में नहीं रखकर खुले स्थल में असुरक्षित रख दिया गया था।

अधिवक्ता भंडारी ने कहा कि परिवाद हरे कागज में पेश नहीं किए जाने की आपत्ति के बावजूद सफेद कागज में ही पेश किए जाने से नाराज होकर जिला आयोग ने परिवाद यह कहकर खारिज कर दिया कि बीमाधारी ने वाहन को अस्पताल की पार्किंग में नहीं रखकर खुले स्थान में रखकर सुरक्षा का उल्लंघन किया है। बीमा कंपनी की ओर से कहा गया कि परिवाद सही खारिज किया गया है सो अपील खारिज की जाएं।

राज्य उपभोक्ता आयोग ने अपील मंजूर करते हुए कहा कि ऐसा लग रहा है कि जिला आयोग ने परिवाद अटकलें और कयास के आधार पर खारिज किया है,क्योंकि चोरी की प्रथम सूचना रपट दूसरे दिन ही दर्ज हो जाने को कदापि अत्यधिक देरी से दर्ज किया जाना नहीं माना जा सकता है।उन्होंने कहा कि अंतिम रपट में चोरी होने पर पुलिस ने कोई भी संदेह नहीं किया गया है।

उन्होंने कहा कि पार्किंग की बजाए खुली जगह पर ताला लगाकर वाहन रखना असुरक्षित नहीं माना जा सकता है और न ही यह बीमा पॉलिसी का उल्लंघन है।

उन्होंने दावा खारिज किए जाने को सेवा में कमी और त्रुटि माना है। उन्होंने बीमा कंपनी को निर्देश दिए कि परिवादी को दावा राशि तीन लाख रुपए मय नौ फ़ीसदी ब्याज और परिवाद व्यय बीस हजार रुपए अदा करें।

उन्होंने जिला उपभोक्ता आयोग को हिदायत दी कि उपभोक्ता अधिनियम उपभोक्ता के हितों एवं अधिकारों के संरक्षण के उद्देश्य से बनाया गया है सो परिवाद, जवाब, प्रार्थना पत्र या शपथ पत्र को हरे कागज में ही पेश करने के वास्ते बाध्य नहीं किया जा सकता है।

फरार आरोपी गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं) । लोहावट थाना पुलिस ने पावर प्लांट लूट और अवैध हथियार के मामले में लंबे समय से फरार चल रहे दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

आरोपी लोहावट थाने के टॉप टेन आरोपियों में शामिल थे। एक करीब सात माह से फरार था। फलोदी एसपी पूजा अवाना ने बताया कि थाना क्षेत्र के ग्राम शैतान सिंह नगर में दिसंबर 2023 में लूट हुई थी। निर्माणाधीन पावर प्लांट में आरोपियों ने अवैध हथियार के दम पर धमकी दी और डकैती का प्रयास किया। आरोपी किशन सिंह पुत्र पुंजराज सिंह राजपूत निवासी नाथडाऊ पुलिस थाना चामू और जितेंद्र सिंह पुत्र मुल्तान सिंह राजपूत निवासी पहाड़गंज सेकंड पुलिस थाना मंडोर को गिरफ्तार किया।

दुष्कर्म के आरोपी को दस साल का कारावास

जालोर, (कासं)। पोक्सो न्यायालय जालोर के विशिष्ट न्यायाधीश भूपेन्द्र कुमार सनाढय ने षनिवार को नाबालिग से दुष्कर्म करने के आरोपी को दस साल के कारावास की सजा सुनाई।

विशिष्ट लोक अभियोजक मुमताज अली सैयद के अनुसार पीडिता के पिता ने पुलिस थाना में रिपोर्ट पेश कर बताया कि 21 मार्च 2023 को मै सुबह काम पर गया हुआ था। घर पर मेरी पत्नी व मेरी नाबालिग पुत्री थे। दोपहर करीब एक बजे मेरी नाबालिग पुत्री मेरी पत्नी को सहेली के घर जाने का कहकर गयी थी। काफी देर तक मेरी नाबालिग पुत्री घर नही आयी तो मेरी पत्नी व अन्य रिश्तेदारो ने मेरी पुत्री को काफी ढूँढा। लेकिन वह कही नही मिली। इसके बाद मेरी पत्नी ने मुझे फोन किया, तो मैने घर आकर पता किया। तब पता चला कि मेहुल गर्ग निवासी लाल पोल के अंदर जालोर मेरी नाबालिग पुत्री को शादी करने की नियत से बहला फुसलाकर जबरदस्ती उसकी इच्छा के विरूद्ध लेकर गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी मेहूल गर्ग पुत्र मुरली मनोहर गर्ग, लाल पोल के अंदर जालोर को पीडिता नाबालिग के साथ इंदौर से गिरफतार किया गया। आरोपी को गिरफतार करने के बाद न्यायालय में पेष कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया। वही पीडिता नाबालिग ने पुलिस को पुछताछ में बताया कि आरोपी मेहूल उसे रेल्वे से इंदोर लेकर गया। वहा एक किराये के कमरे में रखकर उसके साथ दुष्कर्म किया। पुलिस ने बाद अनुसंधान आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया। अभियोजन पक्ष की ओर से 18 गवाह के बयान लेखबद्व किये गये। पोक्सो न्यायायल के विशिष्ट न्यायाधीश भूपेन्द्र कुमार सनाढय ने आरोपी मेहूल गर्ग को नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने का दोषी मानते हुए दस साल के कारावास की सजा सुनाई। सरकार की ओर से पैरवी विशिष्ट लोक अभियोजक मुमताज अली सैयद ने की।

खेतोलाई में शिविर जारी

पोकरण, (निसं)। पोकरण विधानसभा क्षेत्र के खेतोलाई में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को राज्य सरकार के निर्देशानुसार ग्रीष्मकालीन शिविर के छठे दिन शनिवार को स्वच्छता कार्यक्रम के साथ आपणी लाडो अभियान के तहत, बेटी बचाओ बेटी पढाओ की ब्रांड एंबेसडर अवनी की कहानी को बालिकाओं तक पहुंचाया गया ।

प्रधानाचार्य विष्णुकुमार छंगाणी ने बताया कि सुबह प्रार्थना सभा के बाद, सर्व प्रथम विद्यार्थियों द्वारा शिविर थीम अनुसार विद्यालय में व्याख्याता महिपाल के नेतृत्व में स्वच्छता का कार्यक्रम चलाया गया बाद में , शिक्षकों द्वारा कूडा करकट निस्तारण पर वार्ताएं प्रस्तुत की गई। मध्याह्न अवकाश के बाद, आपणी लाडो कार्यक्रम प्रभारी वरिष्ठ अध्यापिका सविता विश्नोई ने पैरा ओलम्पिक खिलाडी अवनी की कहानी बच्चो को सुनाई। सह प्रभारी वरिष्ठ अध्यापक राकेश विश्नोई ने बालिकाओं से जुडी राज्य सरकार द्वारा संचालित अन्य योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में बालिकाओं ने पोस्टर निर्माण, रैली व निबंध प्रतियोगिता आयोजित की।

ग्यारह जनों को ज्योतिष गौरव सम्मान प्रदान किया

जोधपुर, (कासं) । जोधपुर के सामाजिक संगठन सत्यमेव जयते सिटिजन सोसायटी और सीता ज्योतिष एवं वास्तु अनुसंधान केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में जोधपुर के पांचबती चौराहा स्थित होटल चंद्रा में निशुल्क ज्योतिष परामर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर के 11 अलग-अलग विषयों के ज्योतिष विशेषज्ञ निशुल्क रूप से अलग-अलग विधाओं से, आने वालों की जिज्ञासा शांत की।

इस अवसर पर उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 11 ज्योतिषियों को ज्योतिष गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

सत्यमेव जयते सिटिजन सोसायटी की अध्यक्ष विमला गट्टानी और सीता ज्योतिष एवं वास्तु अनुसंधान केंद्र के अध्यक्ष पंडित एस के जोशी ने जानकारी देते हुए बताया कि,पूरी तरह निशुल्क रूप से ज्योतिषी आकलन का लाभ दिलाने के ये निशुल्क ज्योतिष परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया जा गया, जिसमें लगभग 300 से अधिक लोगों ने अलग-अलग विधाओं के ज्योतिष विशेषज्ञों से परामर्श करने के साथ अपना भविष्य जाना।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश गोपाल कृष्ण व्यास रहे,जबकि आध्यात्मिक चिंतक और प्रश्न कुंडली विशेष साध्वी प्रीति प्रियमवंदा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रही।

सोसायटी सचिव चंद्र किरण दवे ने बताया कि जन्म कुंडली और प्रश्न कुंडली विशेषज्ञ पंडित एस के जोशी,वैदिक ज्योतिष विशेषज्ञ पंडित घनश्याम द्विवेदी,वास्तु और कर्म काण्ड विशेषज्ञ डॉ भैरू प्रकाश दाधीच, मेडिकल एस्ट्रोलॉजर डॉ मोनिका आर करल,वैदिक ज्योर्तिविद पंडित खींवराज शर्मा,टैरो कार्ड रीडर(हीलर) चैताली हिमांशु जवेरी व ईशानी पटेल,रेकी चिकित्सा विशेषज्ञ नवीन "ओम जी" रामावत,हस्तरेखा विशेषज्ञ पूजा शर्मा, हस्ताक्षर वास्तु एडवाइजर संदीप भार्गव और वैदिक और नमरोलॉजी ज्योतिष विशेषज्ञ इंदु चारण ने अपनी निशुल्क सेवाएं दी।

अपनी निशुल्क सेवाएं देने वाले सभी 11 ज्योतिषियों को उनकी विशिष्ट योग्यता के लिए ज्योतिष गौरव सम्मान से सम्मानित भी किया गया। इस मौके एडवाइजरी बोर्ड के निदेशक हस्तीमल सारस्वत और समाजसेवी अरविंद कच्छवाहा सहित सत्यमेव जयते सिटिजन सोसायटी और सीता ज्योतिष व अनुसंधान केंद्र परिवार मौजूद रहा।

इस अवसर पर समाज सेवी कार्यों के लिए समाजसेवी पवन बूब और किशोर सिंह पवार को सम्मानित किया गया। जबकि आयोजन को सफल बनाने वाले प्रवीण मेढ,संतोष मेहता, संतोष माहेश्वरी, दमयंती जांगिड़, अजीत सिंह राठौड़, अनिल प्रजापत, प्रभांशु जोशी ,भूमित्र जोशी और निकिता जोशी को उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। ज्योतिष विशेषज्ञ घनश्याम द्विवेदी, मोनिका आर करल और चैताली हिमांशु झवेरी ने भी संबोधित किया।

ग्वार गम व्यवसाय बचाने की गुहार लगाई

जोधपुर, (कासं) । राजस्थान ग्वार दाल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से कृषिमंडी टैक्स के कारण बर्बाद हो रहे गवार गम व्यापार और उधोग को बचाने की गुहार करते हुए इस बार बजट में राहत देने की मांग की है। पड़ोसी राज्यों में मण्डी टैक्स (2.60 प्रतिशत) होने के कारण राजस्थान से किसान और व्यापारी पलायन करने लगे हैं। यदि इस पलायन को नहीं रोका गया तो धीरे-धीरे राजस्थान से ग्वार गम व्यवसाय का नामो निशान मिट जाएगा।

राजस्थान ग्वार दाल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक एस तातेड और सचिव श्रेयांश मेहता ने सवांददाताओं से बातचीत करते हुए बताया कि किसानों और व्यापारियों के साथ-साथ पशुपालक भी बहुत अधिक परेशान है क्योंकि उन्हें पशु आहार भी पंजाब और हरियाणा से महंगे दामों में लाना पड़ रहा है जबकि जोधपुर में ग्वार गम की अच्छी इंडस्ट्री है। मगर सरकार की अनदेखी के चलते धीरे-धीरे फैक्ट्रियां बंद हो रही है । मिले बंद होने से यह व्यापार पूरी तरह से चौपट हो रहा है।

उन्होंने बताया कि वर्तमान हालात के चलते राजस्थान का किसान पलायन करके अपना माल पड़ोसी राज्यों में बेचने लगे हैं । ग्वार गम व्यापारियों ने 10 जुलाई को पेश किए जाने वाले बजट में ग्वार गम उद्योग पर लगाए गए मण्डी टैक्स (2.60 प्रतिशत) समाप्त करने की मांग है। पड़ोसी राज्य हरियाणा में कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण इकाईयों को प्रोत्साहन देने हेतु हाल ही में नीति घोषित करते हुए सम्पूर्ण रूप से मण्डी टेक्स में कच्चे माल हेतु शत-प्रतिशत छूट प्राप्त है। उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग की है कि राज्य में ग्वार गम उद्योग को मण्डी टेक्स में शत-प्रतिशत की छूट प्रदान की जानी चाहिए जिससे राज्य के ग्वार गम आधारित उत्पाद अन्य राज्यों के ग्वार गम व ग्वार गम आधारित उद्योगों से प्रतिस्पर्धा कर सकेगे व प्रदेश में ग्वार गम व: ग्वार गम आधारित उद्योगों में त्वरित वृद्धि होगी व नये निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा व ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर सृजित होंगे।

हैरिटेज में पौधारोपण आज

जोधपुर, (कासं) । राजस्थान हाईकोर्ट एडवोकेटस एसोसियेशन के तत्वावधान में 7 जुलाई, रविवार को उच्च न्यायालय के हैरिटेज परिसर में वृक्षारोपण किया जायेगा।

एसोसियेशन के अध्यक्ष रतनाराम ठोलिया ने बताया कि रविवार को उच्च न्यायालय के हेरिटेज परिसर में प्रात: 9.45 बजे से वृक्षारोपण कार्यक्रम शुरू किया जायेगा। समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति कुलदीप माथुर होंगे । जिनके निर्देशन में सम्पूर्ण हेरिटेज परिसर में वृक्षारोपण किया जायेगा । जिसमें पीपल, नीम, अशोक सहित विभिन्न प्रकार के लगभग 50 पौधों का पौधारोपण किया जायेगा एवं स्वच्छ पर्यावरण को बनाये रखने संकल्प लिया जायेगा। तैयारियों को लेकर पदाधिकारियों की बैठक एसोसियेशन के अध्यक्ष रतनाराम ठोलिया की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

पर्स लूटा

जोधपुर, (कासं) । कायालाना रोड पर एक हैण्डलूम के निकट महिला का पर्स बाइक सवार दो बदमाश लूट कर भाग गए। पर्स में 22 हजार की नगदी, मोबाइल और जरूरी दस्तावेज थे। वह अपने पति के साथ मोपेड पर घर की तरफ लौट रही थी। पीड़िता की तरफ से प्रतापनगर सदर थाने में मामला दर्ज करवाया गया है। पाल लिंक रोड कमला नगर अस्पताल के पास महावीर नगर की रहने वाली सोनू धूत पत्नी दीपक धूत ने पुलिस में रिपोर्ट दी। रात में पति के साथ एक्टिवा पर सूरसागर से घर लौट रही थी।

नोटिस तारीख पेशी

क्रमांक-850 दिनांक 27.05.2024

अज अदालत श्रीमान न्यायाधीश महोदय मुकाम मोटर दुर्घटना दावा अधिकारी सांचोर

तारीदेवी बनाम बालुराम बगैरा

मुकदमा नम्बर

164 सन् 2022, MAL 38/22

बाबत 165, 166 व 140 Act

बनाम बालुराम

वल्द जमाराम कौम जोगी साकिन आकोली तहसील चितलवाना जरिये हाजा इतला दी जाती हैं कि मुकदमें मुन्दज की पेशी वास्ते जवाब तारीख 08 माह 07 सन् 2024 मुकर्रर की गई हैं। तारीख 27 माह 05 सन् 2024

अपर जिला एवं सेशन न्यायालय

मोहर सांचौर, जिला जालोर

रतनपुर बॉर्डर पर 70 लाख का सोना, 26 लाख की नगदी पकड़ी, तीन गिरफ्तार

तीनों आरोपी बैग लेकर पैदल जा रहे थे, संदिग्ध होने पर पुलिस ने रोककर तलाशी ली

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों से लाखों का सोना और कैश पकड़ा है। तीन थैलों में 70 लाख का सोना और 26 लाख रुपए का कैश मिला है। पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है।

बिछीवाड़ा थानाधिकारी ने बताया कि अवैध कारोबार करने वालों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर नाकाबंदी कर गाड़ियों की तलाशी ली जा रही थी। उदयपुर से अहमदाबाद नेशनल हाईवे-48 पर रतनपुर बॉर्डर पर तीन व्यक्ति गाड़ी से उतरे। तीनों पैदल-पैदल जा रहे थे। उनके पास पीठ पर थैले लटके हुए थे। संदिग्ध होने पर तीनों को रोका और पूछताछ की। इस पर तीनों ही घबरा गए। पुलिस ने उनके थैलों की तलाशी ली। थैलों में पैकेट बनकर सोने के जेवरात और कैश भरा हुआ था। तीनों ही लोग जेवरात और

- **पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है**

कैश को लेकर कोई जवाब नहीं दे सके। इस पर पुलिस ने जेवरात और कैश पकड़ लिया।

पुलिस ने उनके पास से 962.05 ग्राम सोने के जेवरात और टुकडे बरामद किए हैं, जिसकी बाजार कीमत करीब 70 लाख रुपए बताई जा रही है। वहीं, 26 लाख 9 हजार 740 रुपए की नकदी पकड़ी है। पुलिस ने जेवरात और कैश ले जा रहे नरेंद्र कुमार जोगसन पुत्र गोंगाराम मेघवाल निवासी भेव, थाना पालडी जिला सिरोही, मुकेश कुमार पुत्र गणेशाराम मेघवाल निवासी उथमान थाना पालडी सिरोही और चंदूलाल पुत्र जैसाजी सेन निवासी कुम्हारों का वास गोल, थाना बारलूट सिरोही को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस तीनों से पूछताछ कर रही है।

रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों को लाखों का सोना और नकदी के साथ गिरफ्तार किया।

चौरासी विधानसभा सीट उपचुनाव में बीएपी का कांग्रेस से गठबंधन से इंकार

चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी

उदयपुर, (कासं)। बांसवाड़ा डूंगरपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया है। रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि राजकुमार रोत के सांसद बनने के बाद चौरासी विधानसभा सीट खाली हो गई है। राजकुमार रोत चौरासी विधानसभा सीट से विधायक थे। भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था। राजकुमार रोत इंडिया गठबंधन से चुनाव लड़ा और बांसवाड़ा लोकसभा सीट से सांसद निवार्चित हुए। इसके पहले वे चौरासी विधानसभा क्षेत्र से भारत आदिवासी पार्टी के विधायक थे, सांसद बनने के बाद उन्होंने से इस्तीफा दे दिया। चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी। भारत आदिवासी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने प्रभारी नियुक्त कर दिए हैं।

जानकारी के अनुसार डूंगरपुर जिले की चौरासी विधानसभा सीट पर पिछले दो चुनावों से भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) का कब्जा है, बीएपी के राजकुमार रोत यहां से लगातार दूसरी बार विधायक बने थे। पिछले चुनाव में राजकुमार रोत ने भाजपा के सुशील कटारा को 70 हजार मतों से हराया था। चौरासी विधानसभा सीट पर कांग्रेस की

- **सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया**
- **सांसद राजकुमार रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है**

जमानत जब्त हो गई थी। चौरासी विधानसभा क्षेत्र में बीएपी की स्थिति मजबूत मानी जा रही है। विधायक के उप चुनाव में बीएपी इस सीट पर कब्जा बनाए रखने के लिए पूरा प्रयास करेगी। वहीं सत्तारूढ पार्टी भाजपा भी इस बार बीएपी का गढ़ ढहाने का इरादा लेकर मजबूती से चुनावी मैदान में उतरने के मूड में है। पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी यहां तीसरे स्थान पर थी, कांग्रेस के उम्मीदवार ताराचंद भगोरा की जमानत जब्त हो गई थी।

चौरासी सीट पर उप चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों की बात करें तो भाजपा से पूनावाडा सरपंच मनोहरलाल डामोर, बडगामा सरपंच कांतिलाल अहारी, भचडयि सरपंच गट्टूसिंह डामोर, गंधवा सरपंच ईश्वर विहात, पूर्व प्रधान महेंद्र बरजोड में से कोई एक हो सकता है। जबकि कांग्रेस के संभावित उम्मीदवारों में कांग्रेस से पूर्व प्रधान निमिषा भगोरा, सीमलवाडा सरपंच रूपचंद भगोरा, भादर सरपंच विनोद कटारा, कारीलाल बुझ और महेंद्र भगोरा के नाम शामिल है। बीएपी में पोपट खोकरिया और अनिल चिखली के नाम चर्चा में है, लेकिन पार्टी में उम्मीदवार चयन को लेकर बनी हुई सलेक्शन प्रणाली में कोई ओर नाम भी आ सकता है। चुनावी समीकरण की बात करें तो लोकसभा चुनाव में बीएपी और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था, जिसकी वजह से कांग्रेस ने बीएपी के राजकुमार रोत को अपना समर्थन देते हुए उम्मीदवार नहीं उतारा था।

गठबंधन की बात आती है तो उम्मीदवार किस पार्टी का होगा यह आने वाले समय में ही तय होगा, लेकिन यहां गठबंधन के आसार कम ही है, क्योंकि लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत ने कांग्रेस से गठबंधन की बात को नकारते हुए कहा था कि कांग्रेस ने उन्हें समर्थन दिया था, गठबंधन नहीं हुआ था।

बीएपी अपनी परंपरागत और मजबूत सीट पर किसी भी पार्टी से समझौता नहीं करना चाहेगी, इसलिए चौरासी सीट पर उप चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार हैं। उपचुनाव में भाजपा भी सरकार होने का फायदा उठाते हुए चौरासी सीट पर पूरी ताकत लगाने के मूड में है।

ट्रक ने 66 भेड़ों सहित चरवाहे को कुचला

- **मृतक के परिजनों ने गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने व मुआवजे की मांग की**
- **जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर हुआ हादसा, सीसीटीवी से गाड़ी की तलाश कर रही है पुलिस**

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर कई दुर्घटनाएं होने के उपरांत भी प्रशासन कोई उपाय कर नहीं पा रहा है। बीती रात्रि को जैसलमेर जिले के देवीकोट कस्बे में सड़क हादसे में एक चरवाहे और 66 भेड़ों की मौत हो गई। हादसे की जानकारी मिलने पर देवीकोट पुलिस मौके पर पहुंची और चरवाहे का शव जवाहर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस अब सीसीटीवी आदि की मदद से हादसे में शामिल गाड़ी की तलाश कर रही है।

देवीकोट पुलिस चौकी के एएसआई दीपसिंह ने बताया कि कि बीती रात करीब एक बजे चरवाहे हनीफ खान (30) पुत्र सुमेर खान, मालकों की ढाणी, रामदेवरा निवासी को ट्रक ने टक्कर मारकर चरवाहे सहित 66 भेड़ों को मौत के घाट उतार दिया। जैसलमेर के राजकीय जवाहर हॉस्पिटल में मृतक के परिजन मॉर्च्यूरी के आगे इकट्ठा हो गये और गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने और मुआवजे की मांग की। ग्रामीण सफियत ने बताया कि प्रशासन की तरफ से कोई भी नुमाइंदा धरना स्थल पर नहीं आया है। इसको लेकर ग्रामीणों में काफी रोष है। जब तक ट्रक ड्राइवर नहीं पकड़ा जाएगा तब तक धरना नहीं उठाया जाएगा।

एएसआई दीपसिंह ने बताया कि देवीकोट कस्बे से लगते एनएच 68 पर छोड़ गांव के पास तीन चरवाहे अपनी भेड़ें लेकर आ रहे थे। 200 के लगभग भेड़ें सड़क पर चल रही थीं। इसी दौरान एक ट्रक तेज गति से आया और भेड़ों समेत चरवाहे हनीफ खान को कुचलता हुआ आगे निकल गया। साथ में चल रहे दो अन्य चरवाहों ने हादसे की जानकारी देवीकोट चौकी को दी। हनीफ भोपा गांव के किसी किसान की भेड़ों को चराने का काम करता था। बीती रात हनीफ दो अन्य चरवाहों देरावरसिंह व अमृतसिंह के साथ रामगढ़ से भोपा गांव जा रहा था। तीनों के पास लगभग 200 भेड़ें थी। हनीफ खान सबसे आगे चल रहा था। उसी दौरान जैसलमेर की तरफ से एक ट्रक तेज गति से आया और हनीफ खान और भेड़ों को रौंदते हुए चला गया। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि हादसे में लगभग 66 भेड़ों कि मौत हो गई जिनमें 30 भेड़ें हनीफ खान की भी शामिल है। इसके अलावा 10 भेड़ें घायल हो गई। पुलिस ने हनीफ खान के शव को जवाहिर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया और सीसीटीवी आदि के आधार पर ट्रक की खोज शुरू की। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि ट्रक बाड़मेर की तरफ गया है। हम ट्रक की तलाश कर रहे हैं।

छत से गिरकर युवक की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। लघुशंका के लिए रात में नींद से उठा युवक छत से नीचे गिर गया। हादसे में युवक की मौत हो गई। घटना, गंगापुर थाने के करणजी की खेड़ी गांव में हुई। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। गंगापुर थाना पुलिस ने बताया कि करणजी की खेड़ी निवासी अंबालाल (43) पुत्र चुन्नीलाल बैरवा बीती रात छत पर सो रहा था। शुक्रवार रात 11.50 बजे वह लघुशंका के लिए नींद से उठा। छत पर दीवार नहीं होने से वह असंतुलित होकर नीचे जा गिरा। गंभीर रूप से घायल अंबालाल को परिजन पहले गंगापुर और बाद में जिला अस्पताल ले गये, जहां डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को पोस्टमार्टम के बाद शनिवार को परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

आंधी-बारिश से फैक्ट्री की दीवार ढही, तीन की मौत

बीकानेर, (निसं)। मानसून की दूसरी ही बारिश ने बीकानेर में कहर बरपा दिया। बीछवाला थाना इलाके के शोभासर गांव में निर्माणाधीन फैक्ट्री की दीवार ढहने से मां-बेटी समेत तीन जनों की मौत हो गई। हादसे का पता चलने पर बीछवाल पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को मलबे से निकाल कर पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। हादसे का पता चलने पर जिला प्रशासन के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे।

बीछवाल एसएचओ नरेश निर्वाण ने बताया कि शोभासर के पास फैक्ट्री का निर्माण कार्य चल रहा है। तेज तूफान में फैक्ट्री की दीवार ढह गई। दीवार के मलबे में श्रमिक भोपाल निवासी टीना (26) पत्नी दीवान सिंह, उसकी ढाई वर्षीय बेटी मनीषा एवं क्रेन चालक औरंगाबाद निवासी संजय पुत्र रामयज्ञ दब गए। हादसे की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने वहां पहुंच कर अन्य श्रमिकों की मदद से तीनों को मलबे से निकाल कर 108 एम्बुलेंस से पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

एएसआई की ड्यूटी के दौरान मौत

जैसलमेर, (निसं)। सीमा सुरक्षा बल के एएसआई की अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के दौरान कठुआ गांव में मौत हो गई। शनिवार को 154 बटालियन बीएसएफ जैसलमेर के जवान एएसआई पुरुषोत्तमसिंह की कार नहर में गिरने से डूबने से मौत हो गई। एएसआई पुरुषोत्तम सिंह (56) बटालियन समेत अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के लिए जैसलमेर से गए थे। ड्यूटी के दौरान कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में गाड़ी से जाते समय गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया और गाड़ी नहर में गिर गई जिससे उनकी मौत हो गई। पुरुषोत्तमसिंह हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के रहने वाले थे। उनकी पोस्टिंग जैसलमेर में थी।

यूडी टैक्स बना 14.56 लाख, वसूला सिर्फ 27 हजार

बीकानेर, (निसं)। भले ही राज्य सरकार ने सभी निकायों को अपनी निजी आय में वृद्धि करने के निर्देश जारी किए हुए हों, लेकिन नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है। नगर निगम की वित्तीय वर्ष 2023-24 की ऑडिट में एक होटल को नगरीय विकास कर के रूप में 14.30 लाख रुपए का अनुचित लाभ दिए जाने की बात कही है। ऑडिट के मेमो नंबर 09 एक जुलाई 2024 में बताया गया है कि निगम की ओर से गंगानगर रोड स्थित एक होटल का वर्ष 2022 में हेरिटेज होटल के रूप में पंजीकरण होने के बावजूद अप्रेल 2016 से मार्च 2022 तक नगरीय विकास कर की गणना औद्योगिक डीएलसी दरों से की गई। इससे होटल को अनुचित लाभ पहुंचाया गया।

ऑडिट मेमो के अनुसार नगर निगम बीकानेर की ओर से 9 मार्च 2024 को आवेदक से बिना आवेदन पत्र, हेरिटेज होटल के रूप में राजस्थान, भारत सरकार

- **नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है**

की ओर से जारी पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त किए बिना एवं तत्कालीन आयुक्त के मौखिक आदेशों के आधार पर ही अवधि अप्रेल 2016 से मार्च 2024 की बकाया राशि 14 लाख 56 हजार 772 रुपए को औद्योगिक डीएलसी दरों से संशोधित गणना करते हुए केवल 27155 रुपए का बिल जारी किया गया। इससे निगम कोष को 14 लाख 29 हजार 617 रुपए की हानि हुई। लेखा परीक्षा के दौरान यह भी पाया गया कि इस होटल की ओर से अपने होटल के निर्माण क्षेत्र में विस्तार करने के लिए निगम में आवेदन किया गया था। इसके अनुसार भूमि का कुल क्षेत्रफल 12212.64 वर्ग मीटर था, जिसमें से पंजीकृत आर्किटेक्ट की रिपोर्ट के अनुसार कुल निर्मित क्षेत्रफल 2685.90 वर्ग मीटर अथवा 3169.36 वर्ग गज निर्मित क्षेत्र था, लेकिन निगम की ओर से होटल से 1665.44 वर्ग गज क्षेत्रफल के अनुसार ही नगरीय विकास कर की गणना की गई है, जिससे निगम को राजस्व हानि हुई है।

ऑडिट मेमो के अनुसार श्रीगंगानगर रोड स्थित इस होटल का हेरिटेज श्रेणी में पंजीकरण प्रमाण मार्च 2022 का है। जबकि निगम की ओर से होटल को इस श्रेणी का लाभ वर्ष 2016 से ही दे दिया गया। ऑडिट मेमो के अनुसार होटल की ओर से पर्यटन विभाग राजस्थान सरकार से हेरिटेज श्रेणी के अंतर्गत पंजीयन करवाया गया था। इसके लिए पर्यटन विभाग की ओर से होटल को प्रमाण पत्र 25 मार्च 2022 न्यू एप्लीकेशन के जरिये जारी किया गया था। उक्त पंजीकरण से पूर्व होटल एक पांच सितारा होटल था, जिसके लिए निगम की ओर से वाणिज्यिक डीएलसी दरों के अनुसार मांग पत्र नगर निगम की ओर से भी भेजा जा रहा था।

जहाजपुर प्रधान के निलंबन के विरोध में कोटड़ी बंद रहा

प्रधान सीता देवी के निलंबन के विरोध में कोटड़ी के बाजार बंद रहे।

भीलवाड़ा, (निसं)। राज्य सरकार ने जहाजपुर प्रधान सीता देवी गुर्जर को नियमित बैठकें आयोजित नहीं करने सहित अन्य मामलों को लेकर शुक्रवार को पद से निलंबित करने के मामले को लेकर शनिवार को कांग्रेस के आव्हान पर कोटड़ी कस्बे को बंद करवाया। वहीं श्रीचारभुजानाथ मन्दिर से उपखण्ड कार्यालय पहुंच कर ज्ञापन सौंपा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव धीरज गुर्जर की माता जहाजपुर पंचायत समिति की प्रधान सीता देवी गुर्जर को ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के अतिरिक्त आयुक्त एवं शासन उपसचिव ने आदेश जारी कर निलंबित कर दिया। इस आदेश को लेकर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर शरनिवार को सुबह से ही कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोग मुख्यालय स्थित चारभुजानाथ मन्दिर पर पहुंचना शुरू हुए, सामूहिक रणनीति तैयार कर मन्दिर से आदेश के विरोध में भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए सदर बाजार, पुराना

- **कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोगों ने विरोध यात्रा निकाली**

बस स्टैण्ड, नेहरू नगर होते हुए उपखण्ड कार्यालय पहुंच नारेबाजी कर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का पुतला जलाकर विरोध प्रदर्शन किया तथा राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान लोगों में आदेश को लेकर भारी विरोध नजर आ रहा था। वहीं कांग्रेस के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं नेइसे राजनैतिक द्वेशता के की गई कार्रवाई बताया। अमावस्या के बाद एकम पर बाजार बन्द होने से कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को बाजार बन्द कराने के लिए किसी प्रकार की मशक्कत नहीं करनी पड़ी। उधर, भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता जहाजपुर में प्रधान पद से निलंबित करने का विरोध प्रदर्शन जहाजपुर की बजाय कोटड़ी में करने को औचित्यहीन बताया।

सहोदरा नदी के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने बचाया

ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने रेस्क्यू किया।

- **ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था**
- **विधायक व जिला कलेक्टर ने बारिश से उपजे हालातों का जायजा लिया**

टोंक, (निसं)। पीपलू उपखंड क्षेत्र के ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने पहुंचकर रेस्क्यू किया। तहसीलदार इंद्रजीत सिंह चौहान ने बताया कि ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था, जिसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंच एसडीआरएफ टीम को बुलाकर रेस्क्यू करवाया। तहसीलदार ने बताया कि ग्राम कुरेड़ी निवासी रामबाबू, शंकरलाल, रामा पत्नी दामोदर, हनुमान मीणा नदी के पास स्थित मकान पर शुक्रवार शाम से ही मकान की छत पर थे। जिनको शनिवार को एसडीआरएफ टीम ने सुरक्षित रेस्क्यू किया।

टोंक जिला कलेक्टर ने शनिवार को ग्राम बोरखंडी कला में तालाब टूटने से बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर जायजा लिया है। जिला कलेक्टर ने ग्रामीणों से रूबरू होते हुए उनकी समस्याओं को सुना। उपस्थित अधिकारियों को तुरंत ग्रामीणों को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए।

इसी प्रकार पीपलू उपखंड क्षेत्र के संदेडा, संदेडा फार्म, हरिपुरा, भूरावली, पीपलू में बारिश से उपजे हालातों का क्षेत्रीय विधायक रामसहाय वर्मा ने पहुंचकर जायजा लिया। विधायक ने प्रशासनिक अधिकारियों को आमजन को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने हरिपुरा से सौंधीफल तक पक्की सड़क बनाए जाने की मांग की। इस पर विधायक ने कहा कि सड़क बनाए जाने को लेकर प्रस्ताव बजट में दिया हुआ है। जल्द ही इस मार्ग पर पक्की सड़क का निर्माण होगा, जिससे भविष्य में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी तरह भूरावली में पानी निकासी को लेकर ग्रामीणों की शिकायत पर पंचायत समिति विकास अधिकारी को निदान के निर्देश दिए।

बनास नदी पर बनाया ईसरदा कॉपर डेम ओवरफ्लो हुआ

शनिवार सुबह बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर कॉपर डेम ओवरफ्लो हो गया।

चौरु/उनियारा, (निसं)। बनेठा कस्बे के समीप बनास नदी पर ईसरदा मुख्य बांध निर्माण कार्य के लिए बनाया गया दस फट भराव क्षमता का कॉपर डेम शनिवार सुबह लगभग सात बजे बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर ओवरफ्लो हो गया। ईसरदा कॉपर डेम पर चादर शुरू हो गई। बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से चैनल गेटों में से पानी लबालब तरबतर होकर बांध निर्माण क्षेत्र में होकर बनास नदी में बहता हुआ नजर आया।

पिछले 24 घंटे से ईसरदा डेम डूब क्षेत्र केचमेंट एरिया में झमाइझम बारिश से शुक्रवार शाम से ही बनास नदी में जल स्तर बढ़ गया था, जिसके बाद तीन चैनल गेट खोल कर पानी की निकासी की गई थी। शनिवार सुबह अचानक बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से डेम लबालब हो कर ओवरफ्लो हो गया। बनास नदी में व्यर्थ बहने वाले पानी को उपयोगी बनाने के लिए तथा जयपुर, सवाई माधोपुर व दौसा जिलों को पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए बनेठा ग्राम पंचायत से तीन किलोमीटर दूर बनास नदी पेटे पट राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2004 में ईसरदा बांध का निर्माण करवाने का निर्णय लिया गया था। वर्ष 2008 में लगभग 40 करोड़ रुपए की लागत से ईसरदा कॉपर डेम का निर्माण कराया गया था।

मुख्य बांध का निर्माण कार्य तीव्र गति से जारी था। इस दौरान बनास नदीं में पानी आ जाने से संवेदक को परेशानी का सामना करना पड़ा। आनन-फानन में शुक्रवार रातभर ईसरदा डेम परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी सभी मशीनों को बनास नदी के किनारे पर लाने के लिए मशक्कत करते नजर आए फिर भी कई सामान पानी में डूब गया। गौरतलब है कि बनास नदीं पर ईसरदा मुख्य बांध का निर्माण कराया जा रहा है, जिसमें 28 ब्लॉक तैयार किए गए हैं और मशीनों के द्वारा निर्माण कार्य जोरों पर चल रहा था।

शनिवार सुबह ईसरदा काफर डेम के ओवरफ्लो होने के बाद सभी मशीनों को नदी में से बाहर निकाल लिया गया है। अब लगभग निर्माण कार्य बारिश के मौसम में बंद ही रहने की संभावना जताई जा रही है। बारिश के बाद ही दुबारा से ईसरदा मुख्य बांध परियोजना का निर्माण कार्य शुरू होने की उम्मीद लगाई जा रही है।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड कोटपूतली

क्रमांक-535 दिनांक-28.06.2024

ई-निविदा सूचना संख्या 03/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पथ निर्माण कार्यो हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं केन्द्रीय/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम	सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली के अन्तर्गत विभिन्न कार्यो की दर संविदा
निविदा की कुल लागत	रूपये 160.32 लाख
धरोहर राशि (2प्रतिशत)	रूपये 3,20,640/-
निविदा फार्म डाउनलोड एवं अपलोड करने की दिनांक	मंगलवार दिनांक 03.07.2024 प्रात 9.30 बजे से सोमवार 15.07.2024 सायं 06.00 बजे तक
निविदा खोलने की दिनांक	मंगलवार 16.07.2024 सायं 5.00 बजे।
निविदा खोलने वाले कार्यालय में ई-ग्रास चालान जमा कराने की दिनांक	मंगलवार 16.07.2024 सायं 2.00 बजे तक।
प्रोसेसिंग शुल्क, निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि जमा कराने की प्रक्रिया	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आनलाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क-8685-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क-0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि-8443-00-108-00-00 ऑफिस आई डी. 32827
यू.बी.एन. नंबर	1. PWD2425WSOB01912 2. PWD2425WSOB01913 3. PWD2425WSOB01914 4. PWD2425WSOB01915

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट "www.dipronline.org" व विभाग की वेबसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" एव "www.sppp.raj.nic.in" पर देखा जा सकता है।

(गौतम मीणा)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली

DIPR/C/5437/2024

'अभ्यर्थियों की महत्वहीन त्रुटियों के निस्तारण के लिए क्या है व्यवस्था'

- **हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आर.पी.एस.सी. सचिव को शपथ पत्र पेश करने को कहा**
- **अदालत ने कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है**

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आरपीएससी सचिव को व्यक्तिश: या वीसी से पेश होकर शपथ पत्र के जरिए बताने को कहा है कि भर्ती में अभ्यर्थियों की ओर से की गई छोटी-मोटी और महत्वहीन त्रुटियों के प्रभावी निस्तारण के लिए क्या व्यवस्था की गई है। जिससे सरकारी नौकरी के योग्य अभ्यर्थियों को अनुचित मुकदमेबाजी से बचाया जा सके। वहीं अदालत ने दोनों अधिकारियों से याचिकाकर्ता के पद पर बने रहने के संबंध में हुए जानकारी पेश करने को कहा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश राजेश की याचिका पर दिए।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है। मामले में राज्य सरकार की ओर से अपनाए तकनीकी दृष्टिकोण की अदालत सराहना नहीं करता है, खासकर तब जबकि भर्ती का उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का चयन करना हो। इस तरह की कार्रवाई से पहले से मुकदमों के बोझ तले दबे न्यायालय में अनावश्यक मुकदमेबाजी की नौबत आती है।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का हिंदी वरिष्ठ अध्यापक भर्ती-2018 में चयन हुआ था। उसकी नियुक्ति को यह कहते हुए निरस्त कर दिया कि उसने आवेदन पत्र में अंग्रेजी में राकेश और हिंदी में राजेश नाम लिखा था। अदालत के दिसंबर, 2020 के अंतरिम आदेश की पालना में याचिकाकर्ता को 23 जून, 2021 को नियुक्ति दी गई। वहीं बाद में उसका आरपीएससी की ओर से आयोजित स्कूल व्याख्याता भर्ती में चयन हो गया। ऐसे में उसके नाम के विवाद को अंतिम रूप से तय किया जाए, ताकि उसे पे-प्रोटेक्शन का लाभ मिल सके। अदालत के सामने आया कि राज्य सरकार और आरपीएससी को याचिकाकर्ता के सही नाम पर संदेह नहीं है। इसके बावजूद भी याचिकाकर्ता की नियुक्ति को अंग्रेजी में गलत नाम होने के आधार पर विवादित किया जा रहा है।

अदालत के पूछने पर बताया गया कि विज्ञापन में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि हिंदी और अंग्रेजी में नाम को लेकर भिन्नता हो तो अंग्रेजी में लिखे नाम को प्राथमिकता दी जाएगी। इसके अलावा राज्य सरकार की ओर से अदालत को इस बात पर भी संतुष्ट नहीं किया जा सका कि नाम की छोटी सी विसंगति को दूर करने के लिए याचिकाकर्ता को मौका क्यों नहीं दिया गया। अदालत ने कहा कि जब याचिकाकर्ता के नाम पर विवाद ही नहीं है तो उसकी नियुक्ति को लेकर विवाद क्यों किया जा रहा है।

माँग दिवस के रूप में मनाया सहकारिता दिवस

जयपुर, (का.सं.)। ऑल इंडिया कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व ऑल राजस्थान कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन के प्रान्तीय महासचिव सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने बताया कि 6 जुलाई अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस को फ़ेडरेशन के राष्ट्रीय आव्हान पर देश भर के सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग दिवस के रूप में मनाया। देश भर में सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग के लिए बेज धारण कर माँग दिवस मनाया। माँगो के लिए सचिव सहकारिता व रजिस्ट्रार सहकारिता को ज्ञापन प्रेषित किए गये। प्रदेश के सहकारी बैंक कर्मियों के वेतनमान सुधार के लिए मुख्यमंत्री, वित्त विभाग सरकार व सहकारी विभाग स्तर से अक्टूबर 2023 में ही सम्पन्न/स्वीकृत अवधिपार लंबित 16वे वेतन समझौते को सभी सहकारी बैंकों में एकरूपता लागू करना, सहकारी बैंकों में कर्मचारी व अधिकारी के तीन साल से रिक्त पड़े पदो पर भर्ती करना आदि को लेकर माँग दिवस मनाया गया।

हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के उर्स का समापन

मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन देशभर से हजारों मुरीदों ने अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी।

जयपुर। संसार चंद रोड स्थित मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन रात में क्लासिकल म्यूजिकल नाइट में फनकारों ने जबरदस्त अपने फन की प्रस्तुति दी। दूसरे दिन सुबह कुरानखानी हुई और दरगाह को गुसल दिया गया। शाम को कव्वाली की महफिल सजी जिसमें देश भर से कव्वाल पहुंचे बॉलीवुड फेम साबरी बंधुओं ने शानदार कलाम पेश किया, महफिल देर रात तक चली। इस मौके पर दरगाह के सज्जादा नशीन डॉक्टर सैयद हबीब उर रहमान नियाजी ने कहा कि तीन दिन के उर्स मुबारक में अलग-अलग दिन अलग-अलग कार्यक्रमों हुए। पहले दिन देश भर के मशहूर क्लासिकल फनकातो ने अपने फन पेश किया। दूसरे दिन शाम को मगरिब के बाद चादरों का सिलसिला शुरू हुआ। देशभर से अकीदतमंदो ने अपनी मुरादों की चादर पेश की। रात में कव्वाली की महफिल सजी जो देर रात तक चली। तीसरे दिन कुल की रस्म के साथुरा का समापन हुआ और देश में ओ अमन रहे, आपसी भाईचारा हमेशा बना रहे की अर्जी लगाई गई। उन्होंने कहा कि सभी मुरिदो से वादा लिया की एक पेड़ ज़रूर लगाएंगे। दरगाह के नायाब सज्जादानशीन सैयद फैज उर रहमान नियाजी ने कहा देशभर से हजारों की तादाद में मुरीद जयपुर पहुंचे हैं और अपने हकीकत के फूल पेश किए हैं और अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी सभी आए। तीनो दिन लंगर का प्रोग्राम रहा हजारों लोगों ने लंगर खाया। कुल की रस्म के साथ उर्स मुकम्मल हुआ।

रत्न आभूषणों के बूथ पर उमड़े देश विदेश के खरीदार

जयपुर, (का.सं.)। शो के दूसरे दिन उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा और विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 का अवलोकन किया ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष आलोक सोंखिया, महासचिव नीरज लुणावत ,उपाध्यक्ष राजू मंगोडी वाला और शो के कन्वीनर अशोक माहेश्वरी ने उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बेरवा और विधायक गोपाल शर्मा को शो का विजिट का स्वागत किया और शो का विजिट कराया।

जयपुर ज्वैलर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष और जस 2024 के सहसंयोजक राजू मंगोडी वाला ने बताया कि उन्होंने प्रदर्शनी का दौरा किया और जयपुर के एक्जीबिटर्स की ओर से प्रदर्शित किए गए रत्न आभूषणों के एक से बढ़कर एक डिजाइन और कारीगरों की कला की सराहना की। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने कहा की जयपुर की ज्वेलरी पूरी दुनिया में मशहूर है और इस तरह के शो यहां के ज्वैलरी व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय मंच पर और मजबूती के साथ प्रस्तुत करती है। बीजेपी सरकार इस शो का पूरा समर्थन और सहयोग करने के लिए हमेशा तैयार है। विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 में सजे रंगीन रत्नों के अनोखे संसार और खूबसूरत गहनों से बेहद प्रभावित नजर आए। उन्होंने कहा कि ज्वैलरी शो, ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर की ओर से किया गया शानदार प्रयास है।

सहकारी संस्थाएं नवीन तकनीक अपनाएं : अर्चना सिंह

जयपुर, (कासं.)। रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने कहा कि प्रदेश में सहकारी संस्थाओं के पल्लवन के लिये आवश्यक है कि वे अधिकाधिक नवीन तकनीक को अपनायें ताकि उनकी कार्यशैली में पारदर्शिता का समावेश हो और सदस्यों का सहकारिता में विश्वास कायम रहे। उन्होंने कहा कि सहकारी संस्थाओं के विकास और प्रसार के लिये उनके संरक्षण, संवर्धन और नियंत्रण में संतुलन रखकर कार्य करने की आवश्यकता है।

सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित करते हुये कहा कि आज से लगभग 120 वर्ष पूर्व प्रदेश में कृषि क्षेत्र में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये सहकारिता का संस्थागत स्वरूप सामने आया था। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज और व्यक्ति की आवश्यकता और पसंद में परिवर्तन आया है। इसलिये अब सहकारी संस्थाओं को स्थानीय आवश्यकताओं और पसंद को ध्यान में रखते हुये अपने कार्यक्षेत्र में बदलाव लाने की जरूरत है।

रजिस्ट्रार ने कहा कि सहकारी संस्थाओं को अपनी सेवा प्रदायगी को बेहतर करते हुये नये नये क्षेत्रों में कार्य करना चाहिये, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सहकारिता में समर्पण और ईमानदारी के साथ कार्य करें और सभी को साथ लेकर चलेंगे तो किसी भी समस्या का समाधान स्थानीय स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं।

रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित किया।

जयपुर डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पूनिया ने कहा कि सहकारिता लोकतंत्र का प्राणतत्व है। जिस लोकतंत्र में सहकारिता नहीं है वह मृतप्राय है। उन्होंने कहा कि स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता, पारस्परिक सहयोग की भावना समाज को एकजुट करती है और इसी से व्यक्ति में सहकारिता का जन्म होता है। समाज में नैतिकता होने पर ही सहकारिता का प्रसार संभव है।

अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के मौके पर राइसेम परिसर में रजिस्ट्रार सहकारिता, जयपुर डेयरी अध्यक्ष, निदेशक राइसेम सहित सभी सहकारजनों ने पौधारोपण किया। सेमीनार में करणपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अध्यक्ष लखविन्दर सिंह, फागी जीएसएस के अध्यक्ष ओ. पी. शर्मा, बीलवा जीएसएस के अध्यक्ष प्रहलाद सहाय, नाबार्ड के पूर्व महाप्रबंधक आर. एस. जोधा, भूतपूर्व संयुक्त रजिस्ट्रार (नियम) लीला पुरूषोत्तम तथा राइसेम निदेशक जितेन्द्र शर्मा ने संबोधन दिया। कार्यक्रम में संयुक्त सचिव सहकारिता दिनेश कुमार जांगिड, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (प्रथम) राजीव लोचन शर्मा, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (द्वितीय) शोभिता शर्मा, प्रबंध निदेशक एसएलडीबी विजय कुमार शर्मा सहित जयपुर सीसीबी के प्रबंध निदेशक तथा राइसेम एवं सहकारिता विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए हर्जाना

जयपुर, (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने फ्लैट की बुकिंग की राशि लेने के बाद भी तय अवधि में फ्लैट का कब्जा नहीं देने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। आयोग ने बिल्डर को निर्देश दिया है कि वह परिवादी को बुकिंग के तौर पर वसूल की गई 1.38 लाख रुपए की राशि 9 प्रतिशत ब्याज सहित लौटाए। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना व सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश लाखन सिंह के परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि उसने बिल्डर के प्रोजेक्ट सूर्या रेजीडेंसी में बुकिंग राशि देकर 2 बीएचके का फ्लैट बुक करवाया था। बिल्डर के प्रतिनिधि ने कहा कि यह प्रोजेक्ट 2019 तक पूरा हो जाएगा और वह उसे 20 दिन में ही बकाया राशि का लोन करवा देगा। इसके बावजूद भी प्रोजेक्ट समय पर पूरा नहीं हुआ। उसने जब विपक्षी के कर्मचारियों से अपनी जमा राशि वापस मांगी तो वे पहले तो टालमटोल करते रहे, लेकिन बाद में उसे डराया कि दुबारा संपर्क किया तो हाथ-पैर तोड देंगे।

दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त जीवाणु को एक बार फिर उम्रकैद

जयपुर, (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-3 महानगर द्वितीय ने नाबालिगों से दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त सिकंदर उर्फ जीवाणु को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख तीन हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। यह प्रकरण चार साल की बच्ची से दुष्कर्म कर जीभ काटने से जुडा है। अभियुक्त सात साल की नाबालिग से दुष्कर्म करने के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक महावीर सिंह किशनावत ने अदालत को बताया कि 23 जून, 2019 को पीडिता के चाचा ने शास्त्री नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसकी चार साल की भतीजी रात करीब दस बजे खेलती-खेलती घर से बाहर निकल गई थी। पुलिस और परिजनों के काफी तलाश करने के बाद भी उसका पता नहीं लगा। वहीं रात करीब दो बजे कोई उसे घर के थोडी दूरी पर छोडकर चला गया। अस्पताल जाने पर पता चला कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है और जीभ काटी गई है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को कोटा से गिरफ्तार किया। सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि अभियुक्त उसे मोटर साइकिल पर बैठाकर नाले में ले गया था और उसके साथ गलत काम किया। जब वह चिल्लाई को अभियुक्त ने चाकू से उसकी जीभ काट दी। जिस पर सुनवाई करते अदालत ने अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

वर्षाकाल में हो रहे अमृत मिशन के काम जांचने पहुंचे आयुक्त

हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने शनिवार को अमृत योजना 2.0 के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया।

जयपुर । हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने शनिवार को अमृत योजना 2.0 के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान आयुक्त सुराणा ने अधिकारियों को सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों को जल्द ढकने के निर्देश दिए, साथ ही बारिश में खुदाई कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए।

- **सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों को जल्द ढकने और बारिश के दौरान खुदाई कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए**

आयुक्त ने बताया कि हेरिटेज निगम क्षेत्र में जयसिंह पुरा खोर, जामडोली सहित परकोटे में अमृत 2 योजना में सीवर का कार्य किया जा रहा है। बारिश में कोई हादसा नहीं हो जाएं, इसके लिए शनिवार को सभी क्षेत्र में खुदाई पर रोक लगाई गई है। इसके अलावा किन क्षेत्र में कार्य हो रहा है, वहां भी बेरीकेट लगाने और खड्डे को जल्द भरने के निर्देश दिए। इस दौरान आयुक्त ने खोर में बने एसटीपी प्लांट का भी निरीक्षण किया। इनके अलावा वर्षा में धंसी हुई सड़कों को जल्द मरम्मत करने के निर्देश दिए।

वहीं, अतिरिक्त आयुक्त डॉ. रौनक बैरागी ने शहर के प्रमुख पार्क का निरीक्षण किया और हेरिटेज निगम की ओर से किए जा रहे पौधा वितरण की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पार्क की सफाई, रखरखाव और हरित क्षेत्र को बढ़ावा देने के निर्देश दिए। अतिरिक्त आयुक्त ने पार्क की स्वच्छता व्यवस्था का जायजा लिया और अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे नियमित रूप से सफाई अभियान चलाएं और पार्क की हरियाली को बनाए रखें। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है बल्कि समाज में जागरूकता भी बढ़ती है। इस दौरान जिन लोगों को पौधों का वितरण किया गया और सभी उपस्थित लोगों से अपील की गई कि वे इन पौधों की अच्छी देखभाल करें और अपने आसपास के क्षेत्रों को हरा-भरा बनाएं।

डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्र को समर्पित किया अपना जीवन : मंजू शर्मा

जयपुर। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 123वीं जयंती के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज उनके चित्र पर पुष्पांजली अर्पित की गई। इस दौरान जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी ने अपने जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया था। कश्मीर को लेकर डॉ मुखर्जी ने नारा दिया था कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे। इस नारे को 70 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने 70 मिनट में पूरा करते हुए कश्मीर से धारा 370 और 35 ए हटाने का ऐतिहासिक काम किया। वहीं दूसरी ओर कुछ राष्ट्र विरोधी लोग और राजनैतिक पार्टियां कश्मीर के मामले को यूएन में ले जाने का काम कर रहे थे, धारा 370 के बिल को संसद में फाड़ने का काम कर रहे थे, ऐसी राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कमजोर करने के लिए भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को एकजुट होकर डॉ मुखर्जी के पदचिन्हों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

- **'उनके नारे ''एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे'' को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया साकार'**

जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश में पंडित नेहरू की परमिट व्यवस्था का भी विरोध किया था। इसी विरोध के स्वरूप उन्होंने राष्ट्र के लिए अपना बलिदान दे दिया, लेकिन उनके बलिदान को जनसंघ के बाद भारतीय जनता पार्टी ने समझा और आज कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी नेता थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी और शिक्षाविद् डॉ मुखर्जी के जीवन चरित्र को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ मुखर्जी उस दौर में जो विचार लेकर चले थे, उनके विचारों को देश में समझने वाला कोई नहीं था। इसके बावजूद उन्होंने अपने विचारों को आगे बढाया। हमें डॉ. मुखर्जी की विचारधारा को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. मुखर्जी के सपने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरा करने का काम किया। कश्मीर में जिन हाथों में पत्थर हुआ करते थे, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन हाथों को रोजगार देकर उनके परिवारों को आगे बढ़ाने की दिशा में काम किया है। पुष्पांजली कार्यक्रम के दौरान भाजपा के संगठक प्रद्युम्न कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनुराधा माहेश्वरी और भाजपा मीडिया कार्यालय प्रभारी चंपालाल रामावत सहित अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पूर्व में की गई सेवा का वेतन संरक्षित करने के आदेश

जयपुर। हाईकोर्ट ने तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2018 में चयनित अभ्यर्थी का समान पद पर पूर्व में की गई सेवा व वेतन संरक्षित करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस अनुप कुमार ढंड ने यह आदेश बनवारी लाल चौधरी व अन्य की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2013 में चयन हुआ था। इस भर्ती में उसे बाडमेर जिला आवंटित हुआ था। वहां सेवा देने के बाद वर्ष 2018 में निकली तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में उसका चयन हो गया और उसे जयपुर जिला आवंटित हो गया। याचिका में कहा गया कि उसकी समान पद पर ही दूसरी नियुक्ति हुई है। ऐसे में राजस्थान सेवा नियम के नियम 24 के तहत उसके वर्तमान वेतन को संरक्षित किया जाए और पूर्व में की गई सेवाकाल की गणना भी की जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता की पूर्व की सेवाकाल की गणना करते हुए वेतन को संरक्षित करने के आदेश दिए हैं।

कोर्ट ने 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज किया

जयपुर, (का.सं.)। जिले की स्थाई लोक अदालत ने वाहन चोरी की सूचना बीमा कंपनी को 317 दिन की देरी से देने और चोरी की एफआईआर 20 दिन बाद दर्ज कराने को संदिग्ध मानकर 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज कर दिया। स्थाई लोक अदालत ने कहा कि वाहन चालक को ऐसा कौनसा जरूरी काम था, जो वाहन में ही चाबी लगाकर चला गया और दूसरे दिन मौके पर आया। वहीं वाहन के मालिक ने चोरी की एफआईआर भी बीस दिन बाद दर्ज क्यों नहीं कराई। वहीं बीमा कंपनी को चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देना भी बीमा शर्तो का उल्लंघन है। ऐसे में परिवादी बीमा क्लेम लेने का अधिकारी नहीं है। लोक अदालत ने यह आदेश किरण सिंह का परिवाद खारिज करते हुए दिए। बीमा कंपनी के अधिवक्ता ने बताया कि परिवादी ने अपने ट्रेलर का बीमा 12 लाख रुपए में बीमा कंपनी से करवाया था। इसकी अवधि 28 नवंबर 2020 से 27 नवंबर 2021 थी। इस दौरान बीमित वाहन 15 दिसंबर 2020 को ही कोटपुतली थाना क्षेत्र से चोरी हो गया, लेकिन वाहन चालक ने बीमा कंपनी को चोरी की सूचना नहीं दी और एफआईआर भी 20 दिन की देरी से दर्ज कराई। वहीं जांच में आया कि चालक खुद ही वाहन की चाबी उसमें लगाकर चला गया था और सुबह वापस आया तो वाहन उसे नहीं मिला। वाहन चालक ने बीमा कंपनी में क्लेम किया, लेकिन कंपनी ने उसे गलत मानते हुए 29 नवंबर 2021 को खारिज कर दिया। इसे परिवादी ने स्थाई लोक अदालत में चुनौती दी थी।

- **बीमा कंपनी को वाहन चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देने का मामला**

माथुर ने लगाया एक पेड़ माँ ने नाम

जयपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य ओमप्रकाश माथुर ने प्रधानमंत्री के आव्हान पर एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के तहत मानसरोवर स्थित अपने आवास के बाहर पेड़ लगाए। इस अवसर पर पूर्व विधायक मानसिंह किन्सरिया स्थानीय पार्षद व निगम में चेयरमैन हरीश शर्मा के साथ कॉलोनी के निवासी उपस्थित रहे।

25 फीट गहरे नाले में गिरा युवक

जयपुर । मानसरोवर इलाके में 25 फीट गहरे नाले में शुक्रवार रात एक युवक गिर गया। नाले में गिरने से उसके हाथ-पैर टूटने के साथ सिर में गहरी चोट लगी है। शिप्रापथ थाना पुलिस ने शनिवार सुबह पता चलने पर रेस्क्यू कर उसे नाले से बाहर निकाला। पुलिस ने घायल युवक को जयपुरिया हॉस्पिटल में एडमिट करवाया है।

मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर किसानों का मान बढ़ाया : डॉ. सतीश पूनिया

जयपुर। भाजपा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा डॉ. सतीश पूनिया को हरियाणा भाजपा प्रदेश प्रभारी बनाये जाने पर प्रदेशभर से जयपुर पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन ने डॉ. सतीश पूनियां को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित समस्त केंद्रीय नेतृत्व का हार्दिक आभार-अभिनंदन व्यक्त किया।

इस दौरान सतीश पूनिया ने जयपुर में राणी सती नगर स्थित अपने जनसंवाद केंद्र पर जनसुनवाई की, जो वह जयपुर रहने के दौरान पिछले कई वर्षों से सुबह 8 से 11 बजे तक प्रदेशभर से पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन से मुलाकात कर जनसुनवाई करते हैं।

सतीश पूनिया ने कहा कि हरियाणा राज्य के प्रभारी के रूप में जिम्मेदारी प्रदान करने हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन व्यक्त करता हूं कि राजस्थान प्रदेश के सामान्य किसान परिवार में जन्मे मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर राजस्थान, हरियाणा सहित समस्त देश के किसानों का मान बढ़ाया है, इससे पहले राजस्थान जैसे बड़े प्रदेश का अध्यक्ष बनाकर भी भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने किसानों का सम्मान बढाया था। उन्होंने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में किसानों एवं खिलाड़ियों की धरती हरियाणा में जनता के आशीर्वाद एवं कार्यकर्ताओं के परिश्रम से फिर से प्रचंड बहुमत की भाजपा सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि, हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार हरियाणा प्रदेश के विकास के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है, वहीं नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार और हरियाणा की नायब सैनी सरकार की जनहितकारी नीतियों पर हरियाणा की सभी 36 कौम की किसान सरदारी, युवा एवं माता बहनें अपने आशीर्वाद से विश्वास की मुहर लगाएंगे और तीसरी बार भाजपा हरियाणा में जीत की हैट्रिक लगाकर प्रचंड बहुमत की सरकार बनाएगी।

हरियाणा भाजपा का प्रभारी बनाए जाने पर डॉ. सतीश पूनिया को कार्यकर्ताओं ने बधाई दी।

मंच पर साकार हुआ भगवान कृष्ण का योगेश्वर स्वरूप

जयपुर । राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में शनिवार को पावन चिंतन धारा आश्रम के सांस्कृतिक प्रकल्प परिवर्तन की ओर से नाट्य प्रस्तुति ''कृष्ण'' का आयोजन किया गया। आश्रम के कलाकारों ने नाटक का मंचन किया। श्री कृष्ण जिन्हें हम भगवान मानते हैं, उन्हें दिन रात भजते भी हैं, परंतु क्या हम भगवान कृष्ण के सही स्वरूप को जानते हैं? इन सवालों से प्रेरणा लेकर कलाकारों ने डॉ. पवन सिन्हा गुरुजी के मार्गदर्शन में यह नाटक तैयार किया। दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, लखनऊ और अमृतसर में सफल आयोजन के बाद राजस्थान में पहली बार इस नाटक का मंचन हुआ। दर्शकों ने न सिर्फ श्री कृष्ण के योगेश्वर स्वरूप से साक्षात्कार किया बल्कि मानव जीवन की सफलता का मंत्र भी आत्मसात किएइस दौरान दर्शकों को भारतीय ज्ञान शोध संस्थान की निदेशिका एवं आदरणीय गुरु माँ डॉ. कविता अस्थाना का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

नाटक अन्याय से त्रस्त, अधर्म को देख धर्म से विमुख होते और भगवान से शिकायत रखने वाले आधुनिक युवाओं की जिज्ञासाओं से शुरू होता है।

भाजपा कार्यर्ताओं ने जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती मनाई

जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी वाटिका में पौधारोपण किया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को पुष्पांजलि अर्पित की। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। भाजपा प्रदेश नेतृत्व के निर्देशानुसार शनिवार को भाजपा नगर मंडल जालोर की ओर से जिला मुख्यालय पर गुरुकुल क्लाचेज में जनसंघ के संस्थापक स्व.डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के उपलक्ष पर पुष्पांजलि व संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम संयोजक व नगर उपाध्यक्ष राजकुमार चौहान ने बताया कि जनसंघ के संस्थापक स्व. डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के उपलक्ष पर पुष्पांजलि व संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन मुख्य सचेतक विधानसभा राजस्थान जोगेश्वर गर्ग के मुख्य आतिथ्य में किया गया। अध्यक्षता भाजपा नगर अध्यक्ष सुरेश सोलंकी ने की। विशिष्ठ अथिति के नाते भाजयुमो जिलाध्यक्ष गजेन्द्रसिंह सिसोदिया, विधानसभा संयोजक दीपसिंह धनाणी, पूर्व नगर अध्यक्ष छगन दास रामावत,नगर महामंत्री व पार्षद दिनेश महावर उपस्थित थे।

अतिथियों द्वारा डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की तस्वीर के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का संचालन जिला कार्यालय मंत्री डिम्पलसिंह ने किया।

कार्यक्रम में नगर उपाध्यक्ष मेथी देवी, पार्षद हीराराम देवासी, रणजीतसिंह राजपुरोहित, नारायणलाल भट्ट, ओम प्रकाश चौधरी, धीरज सुंदेशा, ललित सुंदेशा, राजू माली,सुरेश घांची, दलपत, कमलेश सहित कहि पदाधिकारी जनप्रतिनिधि कार्यकर्ता व छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी का जन्म हुआ। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे। अपने पिता का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी अल्पायु में ही विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर ली थीं। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने स्वेच्छा से अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। इसी समय वे सावरकर के राष्ट्रवाद के प्रति आकर्षित हुए और हिन्दू महासभा में सम्मिलित हुए।मुस्लिम लीग की राजनीति से बंगाल का वातावरण दूषित हो रहा था। वहाँ साम्प्रदायिक विभाजन की नौबत आ रही थी। साम्प्रदायिक लोगों को ब्रिटिश सरकार प्रोत्साहित कर रही थी। ऐसी विषम परिस्थितियों में उन्होंने यह सुनिश्चित करने का बीडा उठाया कि बंगाल के हिन्दुओं की उपेक्षा न हो। अपनी विशिष्ट रणनीति से उन्होंने बंगाल के विभाजन के मुस्लिम लीग के प्रयासों को पूरी तरह से नाकाम कर दिया। उन्होंने एक नई पार्टी बनायी जो उस समय विरोधी पक्ष के रूप में सबसे बडा दल था। अक्टूबर, 1951 में भारतीय जनसंघ का उदभव हुआ। कार्यक्रम में कई वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

एक पेड़ मां के नाम

जैसलमेर, (नि.सं.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मातृ शक्ति व प्रकृति संरक्षण के उदेश्य से शुरू किये गये एक पेड़ मां के नाम के कार्यक्रम का आगाज करते हुवे भाजपा कार्यकर्ताओं ने ट्रांसपोर्ट नगर में डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी वाटिका में पौधारोपण किया।

मीडिया प्रभारी बाबूलाल शर्मा ने बताया कि पौधारोपण कार्यक्रम में विधायक छोटूसिंह भाटी, जिलाध्यक्ष चंद्रप्रकाश सारदा, जिला प्रमुख प्रतापसिंह सोलंकी, नगर परिषद सभापति हरिबल्लभ कल्ला, हिम्मताराम चौधरी, मूलाराम चौधरी, स्वरूपसिंह हमीरा, गेमरसिंह व उम्मेदसिंह सोढा,अरुण पुरोहित,द्वारका दैया, जितेंद्र भूतड़ा, मगन सैन, सुरजाराम ओड, मनोज भाटिया, नीमदान चारण, भवानीसिंह भाटी, गजेंद्र सोलंकी, सुकर्ण मेघवाल, अमृत सुथार, गोवेर्धन भील, सिकंदर खान, मनोरमा वैष्णव, उषा खत्री एवं विजय खत्री सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शर्मा ने बताया कि इससे पूर्व मुखर्जी जयंती पर भाजपा जिला कार्यालय मे उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया गया।

केंद्रीय कारागृह में पौधारोपण किया

जोधपुर, (कासं) । सदस्य सचिव राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जोधपुर जिला की सचिव डॉ. मनीषा चौधरी ने केंद्रीय कारागृह जेल अधीक्षक प्रदीप लखावत के साथ संयुक्त रूप से केंद्रीय कारागृह जोधपुर में साप्ताहिक निरीक्षण कर, व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

साप्ताहिक जेल निरीक्षण के दौरान बंदीजन को राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाले वाली सुविधाओं की जांच की गई। आकस्मिक निरीक्षण में बंदियों से भोजन-पानी एवं जेल में किसी भी प्रकार से हो रही समस्याओं के बारे में पूछा गया, तो बंदियों ने बताया कि भोजन एवं पानी पर्याप्त मिल रहा है और अच्छा खाना दिया जा रहा है।

निरीक्षण के दौरान विचाराधीन बंदीजन तथा सजायाफ्ता बंदियों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनकी अपील, पेरोल, नि:शुल्क विधिक सहायता, भोजन, चिकित्सा इत्यादि के बारे में जांच की गई । साथ ही जेल में कैदियों के पास पैरवी करने के लिए अधिवक्ता उपलब्ध नहीं होने पर उन्हें विधिक सहायता के बारे में जानकारी दी गई । जेलर को निर्देश दिए कि अगर किसी बंदी का कोई अधिवक्ता नही हो तो उसका फॉर्म भरवाकर सम्बंधित को भेजे, ताकि उसको विधिक सहायता के तहत नि:शुल्क अधिवक्ता उपलब्ध करवाया जा सके। सचिव डॉ. चौधरी ने जेल अधीक्षक लखावत के साथ मिलकर पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

प्रवेशोत्सव एवं मैरिट-डे का आयोजन किया

सेंट पॉल उच्च माध्यमिक विद्यालय जालोर में नवीन प्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत एवं सत्र 2023-24 में मेरिट में आए विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। सेंट पॉल उच्च माध्यमिक विद्यालय जालोर में शनिवार को नवीन प्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत एवं सत्र 2023-24 में मेरिट में आने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य फादर बिबिन सेबेस्टियन ने बताया कि यदि लग्न से मेहनत करें, तो सफलता निश्चित मिलती है। विद्यार्थियों को सत्र पर्यंत नियमित रूप से अध्ययन करना होता है। तभी वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर पाता है। इस अवसर पर नव प्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत में नृत्य भी प्रस्तुत किए गए। प्रधानाचार्य फादर बिबिन सेबेस्टियन, स्कूल मैनेजर फादर टॉमीन फिलिप्स ने मेरिट होल्डर विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

नवरत्न सिंह रावल को श्रद्धांजलि दी

जोधपुर, (कासं) । नखत बन्ना भक्त मंडल की ओर से प्रसिद्ध गायक कलाकार नवरत्न सिंह रावल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

मंदिर के पुजारी मोहनलाल सुथार ने सहित उपस्थित भक्तों ने नवरत्न सिंह की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

माजीसा युवा सेवी संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष उम्मेद सिंह ने कहा कि नवरत्न सिंह रावल के आकस्मिक एवं पूरे असामायिक निधन से पूरे राजस्थान में शोक की लहर छा गई। नवरत्न सिंह रावल ने अपनी भजन गायकी से पूरे भारत में जोधपुर का नाम रोशन किया । इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम में कार्यक्रम में मोहित, अमित,ओम नागल, धर्मेंद्र आदि अनेक लोग उपस्थित थे।

आपातकाल लोकतंत्र के इतिहास में काला अध्याय : जोगेश्वर गर्ग

जालोर में लोकतंत्र सेनानी अभिनंदन समारोह मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग के मुख्य आतिथ्य में हुआ। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कहा कि भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में आपातकाल एक काले अध्याय के रूप में जाना जाता है। 25 जून, 1975 को तत्कालीन सरकार ने देश में आपातकाल लगाकर लोकतंत्र का दम घोट दिया था। ये आपातकाल 21 माह तक चला और भारतीय लोकतंत्र पर कभी न मिटने वाला धब्बा छोड़कर चला गया। यह बात मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने शनिवार को जिला मुख्यालय पर आयोजित लोकतंत्र सेनानी अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए कही।

प्राप्त जानकारी के अनुसार उन्होंने कहा कि भारतीय लोकतंत्र के उस कठिन दौर में लोकतंत्र सेनानियों ने अपने अदम्य साहस और संघर्ष के साथ लोकतंत्र की ज्योति को प्रज्वलित रखा। इन महान विभूतियों ने निरंकुश सत्ता के विरूद्ध संघर्ष किया, जेल की यातनाएं सही, प्रताड़नाओं का सामना किया, लेकिन अपना सिर नहीं झुकाया। उन्होंने कहा कि आपातकाल के दौरान प्रेस पर सेंसरशिप लागू की गई, राजनीतिक विरोधियों को बिना मुकदमे के जेल में डाल दिया गया और विरोध प्रदर्शनों को भी बल पूर्वक दबाया गया।

उन्होंने बताया कि लाठी चार्ज, गिरफ्तारियां और यातनाएं देने जैसे काम किए गए, मगर लोकतंत्र के रखवालों ने अपने संघर्ष को जारी रखा।

कार्यक्रम में वरिष्ठ एडवोकेट हरिशंकर राजपुरोहित ने कहा कि लोकतंत्र सैनानियों का साहस और बलिदान देश के इतिहास में हमेंशा स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

लोकतंत्र सैनानी मधुसूदन व्यास ने अपने आपाताकल के दौर का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आपातकाल के दौरान लोकतंत्र को बचाने के लिए किये गये प्रयासों को कभी नहीं भूलाया जा सकेगा। लोकतंत्र के प्रति उनका समर्पण और त्याग आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

कार्यक्रम में ऋषिकुमार दवे, पुरुषोत्तम पोमल, ललित कुमार दवे, नारायण भट्ट, बीएल सुथार, गेनाराम, बंशीसिंह चौहान सहित कई वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

समारोह में लोकतंत्र सैनानी वाधूमल के परिवारजन, एडवोकेट हरिशंकर राजपुरोहित, बंशीसिंह चौहान, गेनाराम, भगाराम सुथार, वागाराम सिवाड़ा, मिश्री बाई धर्मपत्नी चंपालाल, सूरज प्रकाश व्यास, एडवोकेट मधुसूदन व्यास, जोगेश्वर गर्ग, बाबूदास वैष्णव, कुंदनराम मेघवाल, चंपा देवी पत्नी लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, कांता देवी पत्नी पुखराज प्रजापत, मोहन देवी पत्नी विरमाराम मेघवाल व उर्मिला देवी पत्नी ठाकुर प्रसाद बाहेती का सम्मान किया।

इस दौरान रविंद्रसिंह बालावत, रंजू बहन, मदनराज बोहरा, धनराज दवे, लक्ष्मण सुंदेशा, मोहनलाल छीपा, परमानद भट्ट, मोहनलाल सिंधी, शिव कुमार, सांवलाराम गहलोत, मुकेश सोलंकी, कानाराम, प्रेम परमार, अचलेश्वर आनंद, अशोक दवे, जयकरण भटनागर, अम्बालाल और नाथू सोलंकी आदि उपस्थित रहे।

सार-समाचार

विद्या भारती ने विजय जुलूस निकाला

जालोर, (कासं)। जालोर शहर के सिरे मंदिर रोड़ स्थित विद्या भारती जालोर उच्च माध्यमिक के विद्यार्थियों ने परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के उपलक्ष में शनिवार को शहर में विजय जुलूस का आयोजन किया गया। विद्या भारती स्कूल के निदेशक के.एन भाटी ने बताया कि इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा घोषित उच्च माध्यमिक परीक्षाओं के परिणाम में विद्या भारती जालौर के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए संपूर्ण संभाग में विद्यालय का नाम रोशन किया था। विद्यालय के 17 विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त किए थे। जिसमे विद्यालय के छात्र यशराज सोलंकी ने 97.20 प्रतिशत ने सम्पूर्ण जिले में छात्र वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यशराज सोलंकी का इसी वर्ष कक्षा 12 के साथ ही नीट में भी चयन हों गया है। साथ ही विद्यालय के 10 विद्यार्थियों का इस वर्ष इंस्पायर अवार्ड के लिए सिलेक्शन हुआ है जिसमें छात्रों को कुल 40 लाख की छात्रवृत्ति सरकार के द्वारा प्रदान की जाएगी। यह जालौर जिले के लिए गर्व की बात है की शिक्षा में इतना पिछडा होने के बावजूद यहां के विद्यार्थियों ने संपूर्ण संभाग में अपना परचम लहराया। रैली विद्यालय परिसर से गिटको होटल, तिलक द्वारा, अस्पताल चौराहा, राजेंद्र नगर, भीनमाल बायपास रोड, सूरजपोल होते हुए पुन: विद्यालय पहुंची। जुलूस के अंत में विद्यालय के निदेशक के. एन .भाटी ने सभी छात्रों को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए बताया कि इस वर्ष से विद्या भारती जालौर शहर में ही कोटा सीकर की भांति फाउंडेशन की शुरुआत कर रहा है। जिससे जालोर जिले के होनहार विद्यार्थियों को लोगों को बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होगी और जालोर से ही डॉक्टर और इंजीनियर निकलेंगे। अंग्रेजी माध्यम के निदेशक मधुबाला भाटी ने भी सभी बच्चों को उत्कृष्ट रिजल्ट की शुभकामनाएं प्रेषित की एवं आगे भी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया।

वीरमदेव कॉलेज में अपनाये दो नवाचार

जालोर, (कासं)। वीर वीरमदेव राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जालोर में बेस्ट प्रेक्टरीसेस (सर्वोत्तम परिपाटी/ अभ्यास) के रूप में बैंक (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् का स्वायत संस्थान) के निर्देशानुसार दो नवाचार अपनाए गए। कॉलेज प्राचार्य ने बताया कि इसमें प्रथम नवाचार जालोर के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण-संवर्धन हेतु महाविद्यालय का समस्त स्टाफ (शैक्षणिक अशैक्षणिक) तथा नियमित विद्यार्थी प्रत्येक शनिवार को परम्परागत पोशाक धारण करके महाविद्यालय में उपस्थित होंगे। इस नवाचार से विद्यार्थी का जुडाव सनातन परम्परा से बना रहेगा जो समाज के सर्वांगिण विकास में मील का पत्थर साबित होगा। वही दूसरे नवाचार के रूप में समाज में व्याप्त बुराइयों एवं कुरूतियों यथा- अस्पृश्यता-बशा, दहेज, नारी उत्पीडन, को दूर करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेर्वित करना। जिसमें विद्यार्थी गांवो, दाणियों मोहल्ली करबों में नुक्कड नाटक, आयोजित कर इन बुराइयों के प्रति समाज को जागरूक करेंगे। नवाचार के तहत वर्तमान में युवाओं के बीच बढती नशे की प्रवृत्ति को किस प्रकार टोका जाए इसके लिए विभिन्न कार्यक्रम महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित किए जाते रहेंगे। वीर वीरमदेव राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य अर्जुनसिंह उज्ज्वल ने इन दोनों नवाचारों को महाविद्यालय में लागू किया। जिसकी आयुक्त महोदय कॉलेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर ने भूरि-भूरि प्रशंसा कर अन्य महाविद्यालयों को भी इस तरह की समाज उपयोगी को अपनाने की सीख दी। इस अवसर पर प्राचार्य अर्जुनसिंह उज्जवल, कृष्णा देवल, मनीष अखावत, डॉ. चन्दन प्रकाश, गोपालसिंह, मगनाराम, प्रकाश कुमार, सुरेश कुमार, सहित अनेक विद्यार्थी परम्परागत पोशाक पहनकर आए।

राजकीय कार्यालयों में पौधारोपण किया

जालोर, (कासं)। राज्य सरकार एवं जिला कलैक्टर के निर्देशानुसार मानसून के दौरान चलाये जा रहे "एक पेड मां के नाम" वृक्षारोपण महाभियान के तहत शनिवार को प्रात:काल जिले के सभी राजकीय कार्यालयों में परिसरों की सफाई कर वृक्षारोपण किया गया। शनिवार को कलेक्ट्रेट, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग, जिला परिषद, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य केन्द्र, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय, पशुपालन, आबकारी, परिवहन सहित सभी सरकारी कार्यालय परिसरों, सीएचसी व पीएचसी, ग्राम पंचायत व पंचायत समिति कार्यालयों में वृक्षारोपण कर पौधों की जियो टैगिंग की गई। वही राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लेटा परिसर में नीम का पौधा लगाया तथा उन्होंने वृक्षारोपण महाभियान के तहत ग्रामीणों से अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर उनकी देखभाल करने का आह्वान किया। उन्होंने विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के माध्यम से पेड लगाकर प्रकृति के प्रति प्रेम व संरक्षण की भावना विकसित करने की बात कही। जिला कलैक्टर पूजा पार्थ, अतिरिक्त जिला कलैक्टर शिवचरण मीना व जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जवाहर चौधरी ने शनिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया तथा वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण की बात कही।

कृषक उपहार योजना का ऑनलाईन ड्रा निकाला

बालोतरा, (निसं)। बालोतरा शहर के मंडी कार्यालय भवन के सभागार में कृषक उपहार योजना के अन्तर्गत पुरस्कारों हेतु ऑनलाईन ड्रा निकाले गये। जिसमें मण्डी स्तरीय समिति के सदस्य उपस्थित रहे। कृषि उपज मंडी के सचिव सुरेंद्र सिंह ने बताया कि इस योजना के अन्तर्गत मण्डी समितियों में किसानों द्वारा ई-नाम परियोजना के माध्यम से अपनी कृषि उपज बेचने पर जारी विक्रय पर्ची पर प्रत्येक 10,000 रुपए की राशि पर एक कूपन जनरेट होता है। साथ ही किसानों द्वारा अपनी उपज का व्यापारी से ऑनलाईन भुगतान पाने पर भी कूपन जनरेट होते है। मण्डी स्तर पर प्रत्येक छ: माह में जारी कूपनों का ड्रॉ निकाला जाता है। जिसका ड्रॉ 05 जुलाई को निकाला गया। जिसके तहत गेटपास की वि य पर्ची एवं ई-भुगतान पर राजकिसान पोर्टल से ऑनलाईन लॉटरी निकाली गई। जिसमें गेटपास की वि य पर्चीयो पर जारी कूपनो में से लॉटरी द्वारा ड्रॉ निकालने पर 03 किसानों को मश: 25000, 15000, 10000 रुपए का ई-उपहार मिला तथा ई-भुगतान पर जारी कूपनो की लॉटरी पर 03 किसाना को मश: 25000, 15000, 10000 रुपए का ई-उपहार मिला। इस प्रकार लॉटरी प्रकिया द्वारा पुरस्कारो के ड्रा निकाले जाने की प्रक्रिया संम्पादित हुई बैठक में हितबद्ध व्यक्ति, कृषक, मण्डी समिति के व्यापारी एवं कार्यालय स्टाफ आदि उपस्थित रहे।

लाभार्थियों के लिए ई-केवाईसी जरूरी

जालोर, (कासं)। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित सभी लाभार्थियों के लिए ई-केवाईसी किया जाना अनिवार्य है। ई-केवाईसी की अंतिम तिथि को 30 जून से बढ़ाकर 15 जुलाई, 2024 तक किय गया है। जिला रसद अधिकारी आलोक झरवाल ने बताया कि खाद्य सुरक्षा योजना का निरंतर लाभ लेने के लिए योजना के लाभार्थी 15 जुलाई से पूर्व अपने नजदीकी उचित मूल्य दुकानदार के पास जाकर अपने परिवार के सभी सदस्यों की ई-केवाईसी अनिवार्य रूप से करवा लेवें। ई-केवाईसी के लिए परिवार के सभी सदस्यों का बायोमैट्रिक सत्यापन आवश्यक है इसलिए परिवार के सभी सदस्यों को नजदीकी उचित मूल्य दुकान पर जाकर सत्यापन करवाना होगा। उन्होंने बताया कि ई-केवाईसी राज्य में किसी भी स्थान पर स्थित उचित मूल्य दुकान पर की जा सकती हैं। यदि उपभोक्ता के राशनकार्ड में किसी सदस्य का आधार कार्ड नहीं जुडा है तो पहले राशन कार्ड में आधार सीडिंग करवाने के बाद ही उस सदस्य की ई-केवाईसी की जा सकेगी। ई-केवाईसी का कार्य पूर्णत: नि:शुल्क है। यदि किसी उपभोक्ता की ई-केवाईसी के दौरान फिंगर प्रिंट नहीं स्कैन होते हैं तो उनके लिए आईरिस मशीन से ई-केवाईसी की जायेगी।

माली समाज की शोभायात्रा आज

जालोर, (कासं)। संत लिखमीदास मंदिर माली समाज सेवा समिति जालोर की ओर से रविवार को भक्त लिखमीदास महाराज के जन्मोत्सव पर शहर में शोभा यात्रा का आयोजन किया जाएगा। संस्थान मंत्री दिनेश महावर ने बताया कि 7 जुलाई को सुबह 8 बजे जगनाथ महादेव मंदिर राजेन्द्र नगर से कलश यात्रा व शोभायात्रा का आयोजन किया जाएगा। जिसमें ढोल नगाडे, हाथी, घोडा, कलश धारी बच्चियां, संत महात्मा ,लिखमीदास जी महाराज की सुंदर झांकी सहित पारंपरिक वेशभूषा में युवा महिलाएं उपस्थित रहेंगे। कलश यात्रा राजेंद्र नगर से प्रारंभ होकर अस्पताल चौराया हरदेव जोशी सर्कल होते हुए संत लिखमीदास मंदिर कस्तूरबा कॉलोनी पहुंचेगी। जहां पर संत लिखमीदास महाराज की महाआरती की जाएगी। दोपहर में माता बहनों द्वारा भजनों की प्रस्तुतियां दी जाएगी। रात्रि में भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा।

सार-समाचार

पाली में आज कई जगह विद्युत बाधित

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर में 132 केवी विद्युत नगर जीएसएस से सम्बंधित विधुतलाइनों के रखरखाव हेतु रविवार , दिनांक 07.07.2024 ,सुबह 7 से 11 बजे तक 33 केवी हाउसिंग बोर्ड , विद्युत नगर , पुलिस लाइन , फोर्थ फेज , , रोहट फीडर बंद रहेंगे। जिससे सम्बंधित क्षेत्र पुनायता इंडस्ट्रीज ,फोर्थ फेज इंडस्ट्री , नेक्स्टजेन टेक्सटाइल पार्क , हाऊसिंग बोर्ड , सुभाष नगर , मिल क्षेत्र , चिमनपुरा , जोधपुर रोड रेलवे स्टेशन से मंथन सिनेमा तक , लेबर कॉलोनी , सरदार पटेल नगर , प्रताप नगर , आनद नगर, प्रथम,द्वितीय और फोर्थ फेज इंडस्ट्रीज , महराणा प्रताप चौराहा , सोसाइटी नगर , पिंक सिटा, जैन मसाला , सतगुरु नगर , गुरु नगर , बालाजी नगर , सोमनाथ नगर , रूप रजत वाटिका , गणपति नगर, कार्तिक नगर , आईमाता वडेर , भालेलाव रोड , मणिनगर , शिवदीप नगर, नंदी गौशाला के आस पास , गोस्वामी समाज भवन के पास , योगिता पब्लिक स्कूल के पास , राजेंद्र नगर विस्तार, आसान होम , आशापुरा स्कूल के पास , जगदम्बा नगर , अम्बेडकर नग, माया नगर , रावत नगर , आवास, कृष्णा नगर , पुलिस लाइन , राजीव गांधी कॉलोनी , हिम्मत नगर , सर्वोदय नगर , शक्ति नगर , पांच मौका पुलिया , करन सिंह की चाली , जय नग, पंचम नगर , रजत नगर , सिंधी कॉलोनी , नाडी मोहल्ला , पानी दरवाजा, केरिया दरवाजा, रामदेव रोड, दुर्गा कॉलोनी विवेकानंद कॉलोनी , रामनगर, राम रहीम कॉलोनी , पलीवालो का बास , बीकानेरिया बास गाँधी नगर , विकास नगर , बाबा रामदेव कॉलोनी , ट्रीटमेंट प्लांट , गांधी नगर ,राजस्थान पत्रिका , मोहन नगर , पुनायता रोड , शेखावत नगर , जवाहर नगर , मंडिया गांव और शेखो की ढाणी,राजाराम, तुलसी इंडस्ट्रीज , बीपीएल क्वार्टर्स इत्यादि सभी जगह बिजली कटौती रहेगी।

पाठय पुस्तकों का वितरण किया

बालोतरा, (निसं)। राजस्थान सरकार की ओर से महत्वपूर्ण योजना नि:शुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण कार्यक्रम बालोतरा क्षेत्र में हुआ। भाजपा नगर अध्यक्ष एवं पार्षद कांतिलाल हुंडिया, भाजपा जिला महामंत्री अमराराम सुंदेशा, बालोतरा जिला उपाध्यक्ष हितेश पटेल एवं विधालय के गणेशाराम चौधरी प्रिंसिपल ने शनिवार को कक्षा 9, 10,11 एवं 12वीं की रा बाउ मा वि शास्त्री चौक बालोतरा छात्राओं को नि:शुल्क पुस्तक वितरण कर राज्य सरकार की इस महत्वपूर्ण योजना के बारे में बताया। बालिकाओं को कहा कि मन लगाकर अध्ययन करें और आगे भविष्य बनाएं अपने विद्यालय परिवार एवं राज्य का नाम रोशन करें। प्रधानाचार्य माणक चंद कच्छवाह ने अतिथियों का अभिनंदन किया तथा विद्यालय की गतिविधियों के बारे में बताया। कार्यक्रम के पश्चात विद्यालय में पौधारोपण किया गया। पुस्तकालय प्रभारी पनाराम चौधरी, मधुबाला खत्री, भगवान सिंह राजपुरोहित मौजूद रहे।

अनादरा थाना में संवाद कार्यक्रम हुआ

रेवदर, (निसं)। रेवदर के निकट अनादरा थाना क्षेत्र परिसर में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लूणोल की छात्राओं के साथ पुलिस-छात्रा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा ग्यारहवीं तथा 12 वीं की छात्राओं ने पुलिस थाना अनादरा में भ्रमण किया। जिसके बाद बालिकाओं को थाना की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया गया तथा पुलिस के कार्य तथा कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में थानाधिकारी हिंगलाज दान चारण ने उपस्थित बालिकाओं को नवीन आपराधिक कानून में महिलाओं तथा बालिकाओं के संबंध में आपराधिक कानून के संबंध में जानकारी दी। वही पोक्सो एक्ट के संबंध, ट्रैफिक जागरूकता व रोड सेफ्टी नियम के संबंध में भी विस्तार से जानकारी दी।रेवदर- उपखंड के पेंशनर भवन कंकुतार रेवदर के तहसील परिसर में पेंशनरों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष जयन्तिलाल जोशी, सचिव नारायणसिंह भाटी, मन्नाराम कोली, गिरधारी लाल जोशी, बाबु लाल लुहार, रामाराम घांची, फौजाराम रावल, पन्ना लाल राव सहीत ही कई पेंशनर उपस्थित रहे।

कृषि उपज मण्डी समिति को राशि स्वीकृत

बालोतरा, (निसं)। कृषि उपज मण्डी समिति बालोतरा में राजीव गांधी कृषक साथी योजना की बैठक आयोजित की गई। जिसमें उपखण्ड अधिकारी एवं प्रशासक मण्डी समिति राजेश कुमार एवं सुरेन्द्रसिंह, सचिव कृषि उपज मण्डी समिति, बालोतरा द्वारा योजनान्तर्गत प्राप्त कुल 5 आवेदनों की समीक्षा उपरान्त 04 प्रकरणों का निस्तारण किया गया तथा 1 प्रकरण योजना में कवर नहीं होने तथा 01 प्रकरण समय शिथिलता प्रदान करने हेतु निदेशक, कृषि विपणन निदेशालय, जयपुर को राज्य स्तरीय सहायता समिति में भेजे जाने का निर्णय लिया गया। सचिव ने जानकारी दी कि राजीव गांधी कृषक साथी योजना के अन्तर्गत कृषकों को कृषि कार्य करते समय दुघर्टना वश मृत्यु या अंग-भंग होने पर नियमानुसार सहायता राशि मण्डी समिति द्वारा प्रदान की जाती है।

सांसद लुम्बाराम समीक्षा बैठक लेंगे

जालोर, (कासं)। जालोर संसदीय क्षेत्र के सांसद लुम्बाराम चौधरी की अध्यक्षता में केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं की समीक्षा के लिए 8 जुलाई को प्रात: 10 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित की जायेगी। कार्यक्रम के संबंध में यह जानकारी जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जवाहर चौधरी ने दी।

मैं मानद कप्तान जीतू राय, एसएम, वीएसएम, ओलंपियन निशानेबाज, पद्मश्री प्राप्त, ध्यानचंद खेल रत्न और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त। मैं आपको बताना चाहता हूं कि भारतीय सेना के साथ मेरा 17 साल छह महीने का साथ एक जुलाई 2024 को खत्म हो गया। - **जीतू राय**

एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता, अपने रिटायर की घोषणा करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

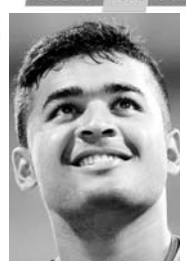

रियान पराग

शुभमन गिल की कप्तानी भारत की युवा क्रिकेट टीम जिम्बाब्वे के दौरे पर है। जहां दोनों टीमों के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का आगाज हो चुका है। वहीं जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। इस दौरान तीन खिलाडियों ने भारत के लिए डेब्यू किया है। इसमें रियान पराग, ध्रुव जुरेल और अभिषेक शर्मा का नाम शामिल है। बता दें कि, ये तीनों खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट के साथ-साथ आईपीएल में भी शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। रियान पराग और अभिषेक शर्मा ने आईपीएल 2024 में धमाकेदार प्रदर्शन किया था।

क्या आप जानते हैं ?... जिम्बाब्वे के तातेन्द्रा तेबु ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टैस्ट कप्तान बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

इंडिया-पाकिस्तान मैच का क्रेज बढ़ा, 23 हजार टिकट बिके

एजबेस्टन, 6 जुलाई। भारत और पाकिस्तान मैच को लेकर फैंस की दीवानगी हर तरफ देखने को मिलती है। किसी भी खेल में इन देशों की टीमें जब आमने-सामने होती हैं तो मुकाबला काफी दिलचस्प हो जाता है। एक बार फिर फैंस को अपने चहेते खिलाड़ियों को खेलते हुए देखना का मौका मिलने वाला है। दरअसल, इंग्लैंड में वर्ल्ड चैंपियंस ऑफ लीजेंड्स 2024 खेली जा रही है। जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सी ले रही हैं। शनिवार को भारतीय चैंपियन और पाकिस्तान चैंपियन के बीच हाईवोल्टेज मुकाबला होने जा रहा है। इस मैच में भारत के पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह, सुरेश रैना, हरभजन सिंह, आरपी सिंह, इरफान पठान जैसे खिलाड़ी मौजूद रहेंगे। वहीं पाकिस्तान की ओर से शाहिद अफरीदी, यूनिस खान, शोएब मलिक, मिस्बाह उल हक मैच का हिस्सा होंगे। एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित वर्ल्ड चैंपियनिप ऑफ लीजेंड्स मैच के लिए सभी 23000 सीटें बिक चुकी हैं। डब्ल्यूसीएल की आधिकारिक विज्ञप्त के अनुसार 3 जुलाई को एजबेस्टन में शुरू हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स 18 जुलाई तक चलेगी। इंडिया चैंपियंस के खिलाड़ी सुरेश रैना ने कहा कि, पाकिस्तान के साथ खेलना हमेशा सम्मान की बात होती है और अब आज का मैच कोई अपवाद नहीं है। मैदान पर हमारी टीम जोश से भरी हुई है और अपना बेस्ट देने के लिए तैयार है। हमें उम्मीद है कि हमारे प्रदर्शन से फैंस को गर्व महसूस होगा।

भारत - युवराज सिंह (कप्तान), हरभजन सिंह, सुरेश रैना, इरफान पठान, यूसुफ पठान, रॉबिन उथप्पा, अंबाती रायुडू, गुरकीरत मान, राहुल शर्मा, नमन ओझा, राहुल शुक्ला, आरपी सिंह, विनय कुमार, धवल कुलकर्णी, सौरभ तिवारी, अनुरीत सिंह, पवन नेगी।

पुर्तगाल को हराकर फ्रांस सेमीफाइनल में पहुंचा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। फ्रांस ने पुर्तगाल को पेनल्टी शूटआउट में 5-3 से हराकर यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2024) के सेमीफाइनल में जगह बनाई और क्रिस्टियानो रोनाल्डो का खिताब के साथ टूर्नामेंट से विदाई लेने का सपना तोड़ दिया। इस मुकाबले को रोनाल्डो बनाम काइलियन एमबापे के बीच जंग के रूप में देखा जा रहा था लेकिन आखिर में फ्रांसीसी खिलाड़ी अपने आदर्श फुटबॉलर पर भारी पड़ा। दोनों टीम ने एक दूसरे को कड़ी चुनौती दी लेकिन अतिरिक्त समय तक भी कोई टीम गोल नहीं कर पाई। इसके बाद पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया जिसमें पुर्तगाल के जोआओ फेलिक्स का शॉट गोल पोस्ट से टकरा गया। इसके बाद थियो हर्नांडेज़ ने निर्णायक किक को गोल में बदलकर फ्रांस को सेमीफाइनल में पहुंचा दिया। फ्रांस को यूरो 2021 के अंतिम 16 में और विश्व कप 2022 के फाइनल में पेनल्टी शूटआउट में हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन यहां किस्मत उसके साथ थी। पुर्तगाल की इस हार से 39 वर्षीय रोनाल्डो ने यूरोपीय चैंपियनशिप से भी विदा ली। वह पहले ही घोषणा कर चुके थे कि वह आखिरी बार इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे हैं। रोनाल्डो ने रिकॉर्ड छह बार यूरोपीय चैंपियनशिप में हिस्सा लिया। फ्रांस सेमीफाइनल में स्पेन से भिड़ेगा जिसने एक अन्य क्वार्टर फाइनल मैच में मेजबान जर्मनी को हराया।

चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए पाक नहीं जाएंगी टीम इंडिया

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 2025 संस्करण में हिस्सा लेने के लिए अगले साल पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मेन इन ब्लू आठ-टीम आईसीसी इवेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगा, जो 19 फरवरी से 9 मार्च तक खेला जाएगा। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, भारत की पाकिस्तान यात्रा के बारे में कोई भी फैसला भारत सरकार द्वारा लिया जाएगा। सूत्र ने बताया कि हालांकि टूर्नामेंट के विवरण पर अभी तक चर्चा नहीं की गई है, लेकिन इसकी बहुत कम संभावना है कि भारतीय टीम पाकिस्तान की यात्रा करेगी। अंततः निर्णय भारत सरकार पर निर्भर है। हालाँकि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) इस मुद्दे को इस महीने श्रीलंका में होने वाली आईसीसी बैठक में उठाने की योजना बना रहा है। आगे कहा गया है कि इस मामले पर सरकार का निर्णय अंतिम होगा, क्योंकि हमने अभी तक आंतरिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की है। चूंकि यह एक आईसीसी इवेंट है, इसलिए हमारे पास कोई भी एकतरफा निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। हालाँकि, अगली बैठक के दौरान अधिक विवरण सामने आ सकते हैं। भारत ने 2008 के बाद से पाकिस्तान की यात्रा नहीं की है। पिछले 16 वर्षों में, केवल एक बार इन दोनों टीमों ने एक-दूसरे के खिलाफ द्विपक्षीय श्रृंखला खेली है, और वह 2012-13 में हुई थी। भारत को पिछले साल एशिया कप में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तान जाना था, लेकिन दोनों देशों के बीच तनाव के कारण टूर्नामेंट को पाकिस्तान से बाहर स्थानांतरित कर दिया गया और फाइनल सहित भारत के मैच श्रीलंका में खेले गए। हालाँकि, भारत के पाकिस्तान दौरे को छोड़ने के फैसले के बावजूद, पाकिस्तान ने पुरुष एकदिवसीय विश्व कप 2023 में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की और हैदराबाद, अहमदाबाद, चेन्नई, बेंगलुरु और कोलकाता में मैच खेले।

जिम्बाब्वे के खिलाफ 116 रन नहीं बना सके वर्ल्ड चैम्पियन

भारत पहले टी-20 मैच में 13 रन से हारा, रजा और चतारा को 3-3 विकेट

हरारे, 6 जुलाई। टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के एक हफ्ते बाद भारत को जिम्बाब्वे से हार का सामना करना पड़ गया। टीम इंडिया को जिम्बाब्वे ने 5 मैचों की टी-20 सीरीज के पहले मुकाबले में 13 रन से हराया।

हरारे में भारतीय टीम 116 रन का टारगेट चेज नहीं कर सकी। टीम इंडिया के खिलाफ टी-20 इतिहास का सबसे छोटा स्कोर डिफेंड हुआ है। टीम के कप्तान सिकंदर रजा और तेंदाई चतारा ने 3-3 विकेट लिए। शनिवार को भारत ने टॉस जीतकर फील्डिंग चुनी। जिम्बाब्वे ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 115 रन बनाए। विकेटकीपर क्लाइव मदांदे ने नाबाद 29 रन बनाए, उन्होंने 10वें विकेट के लिए तेंदाई चतारा के साथ 25 रन की अहम पार्टनरशिप की थी। टीम इंडिया 19.5 ओवर में 102 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। कप्तान शुभमन गिल ने सबसे ज्यादा 31 रन बनाए। वॉशिंगटन सुंदर आखिर में 27 रन बनाकर आउट हुए। आवेश खान ने 16 रन का योगदान दिया। बाकी 8 कोई भी बैटर 7 से ज्यादा रन नहीं बना सका, हालांकि इस टीम में वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम का कोई खिलाड़ी शामिल नहीं रहा।

भांवरी-ओलिवेटी की जोड़ी विम्बलडन से हुई बाहर

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के युकी भांबरी और फ्रांस के उनके जोड़ीदार अल्बानो ओलिवेटी जर्मनी के केविन क्राविएट्ज़ और टिम पुएट्ज़ से तीन सेटों में हारने के बाद विंबलडन टेनिस चैंपियनशिप के पुरुष युगल के दूसरे दौर से बाहर हो गए। भांबरी और ओलिवेटी की जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की और पहला सेट जीतकर बढ़त बनाई लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख पाए और आठवीं वरीयता प्राप्त जर्मन जोड़ी से 2 घंटे 5 मिनट तक चले मैच में6-4 4-6 3-6 से हार गए। भांबरी और ओलिवेटी ने पहले दौर में कजाखस्तान के अलेक्जेंडर बुब्लिक और अलेक्जेंडर शेवचेंको को हराया था। भारत की निगाहें अब रोहन बोपन्ना पर टिकी हैं जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एबडेन के साथ जोड़ी बनाई है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन और यहां दूसरी वरीयता प्राप्त यह जोड़ी दूसरे दौर में जर्मनी के हेंड्रिक जेबेंस और कॉन्स्टेंटिन फ्रैंटजेन से भिड़ेगी। ओलंपिक में जगह बना चुके सुमित नागल और एन श्रीराम पहले ही टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे।

पहले मैच में हार के बाद राधा यादव का बयान, कहा-

हमने गेंदबाजी में कुछ गलतियां की

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय स्पिनर राधा यादव ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 12 रन की हार के बाद स्वीकार किया कि उनके गेंदबाजों ने कुछ गलतियां की जिसका टीम को खामियाजा भुगतना पड़ा।। तजमिन ब्रिट्स (81) और मारिजान कैप (57) ने भारतीय गेंदबाजों की एक नहीं चलने दी जिससे दक्षिण अफ्रीका चार विकेट पर 189 रन बनाने में सफल रहा।

इसके जवाब में भारतीय टीम चार विकेट पर 177 रन ही बना पाई। राधा ने मैच के बाद संवाददाताओं से कहा,"यह जानना महत्वपूर्ण था कि इस विकेट पर किस लेंथ और किस गति से गेंदबाजी करनी है। हमने गेंदबाजी इकाई के रूप में कुछ गलतियां की। हमने उन्हें 10 से 15 रन अधिक बनाने दिए। हमें उन्हें यॉर्कर लेंथ पर गेंद करनी चाहिए थी।" उन्होंने रविवार को होने वाले दूसरे मैच के बारे में कहा,"हमें अपनी रणनीति पर अमल करना होगा और जल्द ही विकेट के व्यवहार को समझना होगा। इससे हमारे लिए काम आसान हो जाएगा।" दक्षिण अफ्रीका को इससे पहले वनडे श्रृंखला और एकमात्र टेस्ट मैच में हार का सामना करना पड़ा था और उसकी स्टार बल्लेबाज तज़मिन ब्रिट्स ने कहा कि उनकी टीम को इस जीत की सख्त जरूरत थी जिससे उनका अगले साल बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए आत्मविश्वास बढ़ेगा।

ब्रिट्स ने कहा,"हमें इस तरह की जीत और टीम में आत्मविश्वास बढ़ाने की सख्त जरूरत है। इस तरह के आत्मविश्वास से हम न केवल सेमीफाइनल में जगह बना सकते हैं बल्कि विश्व कप भी जीत सकते हैं। इस मैच में जीत दर्ज करना शानदार रहा लेकिन अगले दो मैच जीतना और बेहतर होगा।

ओलंपिक की तैयारी के लिए पेरिस डायमंड लीग में विश्व स्तरीय खिलाड़ियों के सामने होंगे साबले, जेना

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के शीर्ष स्टीपलचेस एथलीट अविनाश साबले और भाला फेंक खिलाड़ी किशोर जेना रविवार को एक दिवसीय डायमंड लीग के पेरिस चरण में अपनी ओलंपिक तैयारियों को बेहतर करने की उम्मीद करेंगे। मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने पिछले कुछ समय से परेशान कर रही जांघ की समस्या के कारण इसमें हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है।

साबले और जेना दोनों ही फॉर्म में नहीं हैं और उन्होंने ओलंपिक से पहले ज्यादा प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं लिया है। पर अब वे पेरिस की परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की कोशिश करेंगे। ओलंपिक में एथलेटिक्स स्पर्धायें एक अगस्त से शुरू होंगी। 29 वर्षीय साबले ने अभी तक दो 3000 मीटर स्टीपलचेस स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। उन्होंने पोर्टलैंड में 8:21.85 और पंचकुला में 8:31.75 का समय निकाला था जबकि उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय 8:11.20 है।

एशियाई खेलों के मौजूदा स्वर्ण पदक विजेता ने कहा, "मैंने पिछले दो साल में गलतियां की हैं। मैं दो विश्व चैंपियनशिप (2022 और 2023) में पूरी तरह फिट था। लेकिन दोनों में अच्छा नहीं कर सका। मैं सुधार करना चाहता हूं और उम्मीद करता हूं कि यह मेरा सर्वश्रेष्ठ ओलंपिकहोगा।"

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की संगीत सेरेमनी में इन क्रिकेटर्स ने की शिरकत

मुंबई, 6 जुलाई। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट 12 जुलाई को शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं, लेकिन उनकी शादी से पहले की रस्में मार्च से ही चल रही हैं। अंबानी परिवार ने शुक्रवार को नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर में इस कपल के लिए एक भव्य संगीत समारोह का आयोजन किया। जिसमें बॉलीवुड सेलिब्रिटी के साथ क्रिकेटर्स ने भी शिरकत की। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के संगीत समारोह में टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतने वाले सूर्युकमार यादव और हार्दिक पंड्या भी नजर आए। हालांकि, हार्दिक इस दौरान अपनी भाभी पंखुड़ी भाई क्रुणाल और सहयोगी खिलाड़ी ईशान किशन के साथ नजर आए।

म्यांमा के खिलाफ मैत्री मैचों के लिए भारत की 23 सदस्यीय महिला टीम की घोषणा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने शनिवार को म्यांमा के खिलाफ यांगून में नौ और 12 जुलाई को होने वाले दो मैत्री मैचों के लिए 23 सदस्यीय सीनियर महिला टीम की घोषणा की।

मुख्य कोच चाओबा देवी ने एआईएफएफ की विज्ञप्त में कहा, "टीम में सीनियर और जूनियर खिलाड़ियों का मिश्रण है। मैं टीम के संयोजन से संतुष्ट हूं। पिछले महीने उज्बेकिस्तान के साथ खेलने के बाद हमने 10 दिन अंदर अपना राष्ट्रीय शिविर शुरू कर दिया। "

उन्होंने कहा, "सभी खिलाड़ी फिट हैं जो अच्छी बात है। खिलाड़ी अपने क्लबों में ट्रेनिंग ले रही थीं। भारतीय महिला फुटबॉल टीम का पिछला दौरा उज्बेकिस्तान का जिसमें वह मेजबान टीम से एक मैच में 0-3 से हार गयी थी और दूसरे मैच में 0-0 से ड्रा खेला था।

भारतीय टीम : गोलकीपर: श्रेया हुड्डा, एलंगबाम पंथोई चानू, मैबाम लिनथोइंगम्बी देवी। डिफेंडर: लोइटोंगबाम आशालता देवी, हेमम शिल्की देवी, संजू, वांगखेम लिनथोइंगम्बी देवी, अरुणा बाग।

प्रज्ञाननंदा और गुकेश टाईब्रेकर में हारे, कारुआना ने जीता खिताब

बुखारेस्ट, 6 जुलाई। भारत के आर प्रज्ञाननंदा और डी गुकेश को चार खिलाड़ियों के बीच खेले गए टाइब्रेकर में हार का सामना करना पड़ा जिसमें दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी फैबियानो कारुआना ने तीनों रैपिड गेम जीतकर सुपरबेट क्लासिक में अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। कारुआना क्लासिकल प्रारूप में नीदरलैंड के अनीश गिरी से हार गए, जिससे मुकाबला रोचक बन गया क्योंकि गुकेश, प्रज्ञाननंदा और फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा सभी उनकी बराबरी पर पहुंच गए।

प्रज्ञाननंदा मुख्य बाजी में अलीरेजा के सामने एक समय बेहद मुश्किल स्थिति में फंसे हुए थे। यदि फ्रांसीसी खिलाड़ी क्लासिकल दौर की इस बाजी को जीत जाता तो फिर वह कारुआना से आगे निकल जाते और विजेता का

फैसला करने के लिए टाइब्रेकर की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन कारुआना हार गए, जबकि गुकेश और प्रज्ञाननंदा ने अपनी अपनी बाजियां ड्रॉ खेली जिससे विजेता का फैसला करने के लिए चार खिलाड़ियों के बीच टाइब्रेकर की स्थिति बन गई। कारुआना ने दिखाया कि आखिर उन्हें क्यों टाइब्रेकर का मास्टर कहा जाता है।

उन्होंने साबित कर दिया कि वे युवा पीढ़ी से बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। अमेरिका के इस खिलाड़ी ने टाइब्रेकर में अपने तीनों प्रतिद्वंदियों गुकेश, प्रज्ञाननंदा और अलीरेजा को हराकर 68500 अमेरिकी डॉलर का पहला पुरस्कार जीता।

इससे पहले प्रज्ञाननंदा टूर्नामेंट में अपनी पहली हार की तरफ बढ़ रहे थे लेकिन अलीरेजा की एक गलती का फायदा उठाकर वह बाजी ड्रा करने में सफल रहे। गुकेश ने वेस्ली सो के साथ अंक बांटकर टाइब्रेकर में खेलने का हक पाया था।

माही के बर्थडे पर बनाया 100 फीट ऊंचा कट आउट

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के 43वें जन्मदिन के मौके पर फैंस की दिवानगी देखते ही बन रही है। अपने थला के जन्मदिन के मौके पर तेलुगु फैंस ने माही का 100 फीट कट आउट बनाया है। रांची में 7 जुलाई 1981को जन्में एमएस धोनी की फैन फॉलोइंग पूरी दुनिया भर में है। आईपीएल के समय हर मैदान धोनी के फैंस से भरे होते हैं। पहले अपनी कप्तानी में टी20 वर्ल्ड कप के अलावा वनडे वर्ल्ड कप और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी देश के नाम की। इसके बाद आईपीएल में भी धोनी का जलवा आज भी बरकरार है। अपनी टीम चेन्नई सुपर किंग्स को पांच बार चैंपियन बनाया है।

घरेलू क्रिकेट सत्र की तैयारियों के लिए आरसीए एडहॉक कमेटी की हुई बैठक

जयपुर 6 जुलाई। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक विधायक जयदीप बिहाणी की अध्यक्षता मे आज जयपुर मे राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी कि मीटिंग आयोजित हुई जिसमे सभी सदस्यो ने बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र से पुर्व राजस्थान के खिलाडियो को उचित तैयारियो व विभिन्न आयु वर्ग कि टीमो के सभावितो हेतु राज्य कि क्रिकेट प्रतियोगिताओ व अन्य गतिविधियो को जल्द से जल्द शुरू करने का निर्णय किया गया। जयदीप बिहाणी जी ने बताया की कमेटी ने आगामी दिनो मे क्रिकेट पिच व मैदान के रखरखाव की अहमियत को देखते हुए 3 दिवसीय मैदान व पिच क्युरेटर सेमीनार के आयोजन सहित राज्य स्तरीय अंडर 19 क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन किये जाने पर सहमती प्रदान की। कमेटी ने आरसीए स्टाफ को आगामी क्रिकेट गतिविधियो की तैयारीयो हेतू निर्देश भी दिए। इस अवसर पर आरसीए एडहॉक कमेटी सयोजक जयदीप बिहाणी व सदस्य विमल शर्मा, रतन सिंह व धर्मवीर सिंह शेखावत मौजुद थे।

वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश में भारतीय टीम की कोच होंगी जयपुर की सुरभि मिश्रा

अच्छी तैयारी, इस बार करेंगे पहले से अच्छा प्रदर्शन

जयपुर, 6 जुलाई। पूर्व अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश खिलाड़ी और भारतीय स्क्वैश टीम की कोच सुरभि मिश्रा का कहना है कि भारतीय टीम अच्छी तैयारी के साथ वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए जा रही है। हम हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। गुलाबी नगर की सुरभि मिश्रा को ह्यूस्टन में 12 से 23 जुलाई तक आयोजित होने वाली डब्ल्यूएसएफ वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम का कोच नियुक्त किया है। सुरभि 8 जुलाई को भारतीय दल के साथ दिल्ली से ह्यूस्टन के लिए उड़ान भरेंगी।

पिछले दस साल से लगातार भारतीय टीम के साथ जुड़ी सुरभि ने मीडिया से बातचीत में कहा कि फेडरेशन की ओर से बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि भारतीय खिलाड़ी अच्छी तैयारी और पूरे फॉर्म में हैं। टीम की प्रैक्टिस और परफॉरमेंस को देखते हुए कह सकते हैं कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में हम पहले के मुकाबले इस बार कई पदक जीतकर लौटेंगे। सुरभि ने कहा कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में दुनिया की शीर्ष टीमें हिस्सा ले रही हैं।

वहां हर मुकाबला चुनौतीपूर्ण होगा। लेकिन हमें पदक जीतने के लिए इजिप्ट, मलेशिया, इंग्लैंड, पाकिस्तान और मेजबान अमेरिका जैसी मजबूती टीमों से टक्कर लेनी होगी। सुरभि की अगुवाई में ही भारतीय दल ने पिछले वर्ष चीन में हुए एशियाई खेलों में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य सहित पांच पदक अपने नाम किए थे। एशियाई खेलों के इतिहास में भारत का स्क्वैश में यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

40 देशों की टीमें खेलेंगी

सुरभि ने बताया कि जूनियर वर्ल्ड कप में 40 देशों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसमें 12 से 17 जुलाई तक व्यक्तिगत चैंपियनशिप के मुकाबले आयोजित किए जाएंगे, वहीं 18 से 23 जुलाई तक टीम चैंपियनशिप के मुकाबले होंगे। चैंपियनशिप में भारत

का 12 सदस्यीय दल हिस्सा लेगा। इसमें बॉयज और गर्ल्स कैटेगरी में छह-छह खिलाड़ी शामिल हैं।

जयपुर का अवलोकित भी टीम में

वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए भारतीय दल में जयपुर के अवलोकित सिंह को भी शामिल किया गया है। सुरभि ने बताया कि अवलोकित को पिछले माह चेन्नई में हुई ट्रॉयल के आधार पर टीम में चुना गया है। अवलोकित वर्तमान में जूनियर रैंकिंग में नम्बर सात के खिलाड़ी हैं। अवलोकित ने स्क्वैश खेल की शुरुआत जयपुर में सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित राजस्थान स्क्वैश एकेडमी से की। वे पिछले कई साल से सुरभि मिश्रा से ही प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस दौरान अवलोकित ने राष्ट्रीय स्तर पर कई खिताब अपने नाम किए हैं।

सुरभि खुद जीत चुकी हैं वर्ल्ड जूनियर में पदक

सुरभि मिश्रा खुद वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में देश के लिए पदक जीत चुकी हैं। उन्होंने बताया कि 2009 में चेन्नई में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में उन्होंने गर्ल्स टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया। यह इस टूर्नामेंट में देश का पहला पदक था। इसी चैंपियनशिप में दीपिका पल्लीकल ने व्यक्तिगत स्पर्धा में भी कांस्य पदक हासिल किया था। उन्होंने बताया कि भारत ने 2012 में कतर में बॉयज टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था। पिछले वर्ष आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में हुई जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत की गर्ल्स टीम शीर्ष आठ में रही, वहीं 2023 में हुई बॉयज जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत ने पांचवां स्थान हासिल किया था।

भारतीय टीम

बॉयज- शौर्य बावा (दिल्ली), युवराज वाधवानी (मुम्बई), अयान वजीरअली (मुम्बई), अरिहन्त के. एस. (तमिलनाडु), अवलोकित सिंह (जयपुर), तवनीत सिंह मूंदड़ा (मध्य प्रदेश)।

गर्ल्स- अनाहत सिंह (दिल्ली), उन्नित त्रिपाठी (उत्तर प्रदेश), निरुपमा दुबे (महाराष्ट्र), शमीना रियाज (तमिलनाडु), टियाना परसरामपुरिया (महाराष्ट्र), सहर नैयर (चंडीगढ़)।

कोच- सुरभि मिश्रा और हरिंदर पाल सिंह संधू।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार कोटा आगमन पर शहर भर में जगह-जगह उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। बिड़ला के स्वागत के लिए शहर भर में स्वागत द्वार बनाए गये तथा स्वागत मंचों के जरिये पुष्प वर्षा भी की गई।

दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद कोटा पहुँचे ओम बिड़ला का भव्य स्वागत

हिंडोली से कोटा तक भव्य रोड शो, स्वागतद्वार बनाकर जगह-जगह शानदार स्वागत हुआ

- **रोड शो में शामिल लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर वाली टी शर्ट पहन रखी थीं।**
- **भाजपा के स्थानीय नेताओं व कार्यकर्ताओं ने स्पीकर बिड़ला को 51 किलो का पुष्पहार पहनाया तथा साफा पहनाकर शाल ओढ़ाया।**
- **बिड़ला के साथ, प्रदेश सरकार के मंत्री मदन दिलावर, हीरालाल नागर तथा क्षेत्र में भाजपा विधायकों ने भी रोड शो में शिरकत की।**

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार अपने लोकसभा क्षेत्र कोटा-बूंदी पहुंचने पर ओम बिड़ला का भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। हैलिकॉप्टर से बूंदी के हिंडोली विधानसभा क्षेत्र पहुंचने के बाद हिंडोली से बूंदी तक पहले चरण का रोड शो हुआ।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला खुली जीप में भाजपा के स्थानीय नेताओं के आम जनता का अभिवादन करते हुए हिंडोली से बूंदी की तरफ रवाना हुए। उनके स्वागत में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं और आमजन की भीड़ उमड़ी, साथ में गाड़ियों का भी लंबा काफिला था। जगह-जगह उनका फूल बरसाकर और मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। बिड़ला के रोड शो का दूसरा चरण कोटा में हुआ। ओम बिड़ला लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने वाले राजस्थान के दूसरे नेता हैं। इससे पहले कांग्रेस के बलराम जाखड़ कांग्रेस की सरकार के वक्त लोकसभा के दो बार अध्यक्ष बने थे। दूसरी बार इस पद पर काबिज होने से ओम बिरला राजस्थान में भाजपा का बड़ा चेहरा बन कर उभरे हैं।

कोटा संवाददाता के अनुसार, कोटा शहर में बिड़ला के स्वागत के लिए प्रवेश द्वार लगाए गए। प्रवेश द्वार के दोनों तरफ़ से पन्नियों की बरसात और नगाड़ों से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं, पुरूषों ने सिर पर साफे बांधे हुए थे और कई लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर छपी टीशर्ट पहन रखी थी। लोगों ने इस अवसर को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाया। कोटा शहर में विभिन्न संस्थाओं, व्यापारियों, जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों ने लोकसभा अध्यक्ष का जोश के साथ स्वागत किया। जगह-जगह पर स्वागत द्वार व मंच बनाए गए और आतिशबाजी भी की गई।

कोटा प्रभारी मंत्री गौतम कुमार दक, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा, प्रदेश मंत्री अनुसुइया, शिक्षामंत्री मदन दिलावर, ऊर्जामंत्री हीरालाल नागर, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, लाडपुरा विधायक कल्पना देवी, पूर्व कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, रामगोपाल बैरवा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने लोकसभाध्यक्ष को साफा, शॉल, 51 किलो का पुष्पहार एवं श्रीराम मंदिर का चिन्ह देकर उनका भव्य स्वागत किया।

वन रक्षक भर्ती परीक्षा पेपर लीक केस में 11 आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने 2022 में हुई इस परीक्षा के फर्जीवाड़े का खुलासा कर दिया है

- **आरोपियों ने हरेक अभ्यर्थी से 8 लाख रू. लिये थे।**
- **आरोपी मोबाइल में प्रश्न पत्र लाए थे तथा अभ्यर्थियों को बोल-बोलकर जवाब लिखवाए गए थे।**
- **इन सभी अभ्यर्थियों का वन रक्षक पद पर चयन हो गया था।**

बांसवाड़ा, 6 जुलाई (निसं)। पुलिस ने वनरक्षक भर्ती परीक्षा-2022 में पेपर लीक मामले का खुलासा करते हुए 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। महानिरीक्षक पुलिस एस. परिमला, जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाला के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना एवं पुलिस उप अधीक्षक एसओजी बाबूलाल मुरारिया के नेतृत्व में टीम गठित की गयी थी।

जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाला ने बताया कि डमी कैंडिडेट बिठाकर परीक्षा दिलाने के मामले की जाँच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लीव रिजर्व रेंज धनफूल मीना कर रहे थे। जांच के दौरान प्रवीण पुत्र हीरालाल मालवीया, निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा व सविता डोडियार पत्नी प्रवीण मालवीया निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा, को 28 जून को गिरफ्तार किया गया था। अनुसंधान के दौरान प्रवीण मालवीया व उसकी पत्नी सविता डोडियार ने बताया कि वनरक्षक भर्ती सूचना 2020 में निकली थी, जिसकी परीक्षा 13 नवंबर 2022 को दो पारियों में हो रही थी। सकन सिंह खड़िया ने परीक्षा के एक दिन पहले फोन कर बताया कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा में बैठने वाले अभ्यर्थियों से बात कर 8 लाख रुपये प्रति कैंडिडेट की व्यवस्था कर सकते हो तो उनको बुला लो, कल की परीक्षा के पेपर लेकर आयेंगे।

इस पर मालवीया ने भीलकुआ निवासी छगन पारगी के माध्यम से सुक्रम पुत्र रमेश डामोर निवासी बगायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका बड़ोदिया, सुभाष पुत्र रमेश डिंडोर निवासी कोठारिया थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका टिमेड़ा, वीरसिंह पुत्र कन्हैयालाल कटारा निवासी नवागांव थाना कुशलगढ़, हाल अध्यापक राउमावि उलटन धरियावाद, शीला पत्नी ईश्वरलाल पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, निरमा पत्नी सुक्रम डामोर निवासी बकायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, शिल्पा पत्नी भावचंद मईड़ा निवासी नागदा बड़ी थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक रेंज डूंगरा, संगीता पुत्री पवन कुमार गरासिया निवासी रोहनिया रामसिंह थाना सज्जनगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, ईश्वरलाल पुत्र नाथु पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़ को शास्त्री नगर किराये के मकान में बुलाया। तेरह नवंबर की सुबह हरीश उर्फ हीराराम पुत्र सरतनाराम सारण निवासी अरटवाव गुड़ामलानी बाड़मेर व अभिमन्यु सिंह पुत्र हिम्मत सिंह चौहान निवासी चिखला थाना कुआ जिला डूंगरपुर, हाल कनिष्ठ अभियंता शिक्षा विभाग मुख्य खंड शिक्षाधिकारी चिखली जिला डूंगरपुर दोनों घर आये और अपने मोबाइल में लाये परीक्षा का पेपर सभी अभ्यर्थियों को बोलकर हल करवाया जिससे सभी अभ्यर्थियों का वनरक्षक भर्ती 2022 में चयन हो गया। पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था।

पुलिस टीम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना, एसओजी पुलिस उप अधीक्षक बाबूलाल मुरारिया, सहायक उपनिरीक्षक अमरसिंह व चन्द्रवीर सिंह, एसओजी हैड कांस्टेबल संतोष कुमार, एसओजी कांस्टेबल लक्ष्मणलाल, एसओजी चालक कांस्टेबल अरविन्द कुमार, कांस्टेबल कैलाशचंद्र शामिल थे।

कश्मीर में दो...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुठभेड़ कुलगाम के मोदरगाम गांव में उस समय शुरू हुई जब सुरक्षा बलों की संयुक्त टीमें आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके में घेराबंदी और तलाश अभियान (कासो) चला रही थीं।

एक सुरक्षा अधिकारी ने कहा, जब सेना की संयुक्त टीम पर गोलीबारी शुरू हुई तो अभियान एक मुठभेड़ में बदल गया। शुरुआती गोलीबारी में सेना की एलीट यूनिट का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल जवान को एक चिकित्सा सुविधा में ले जाया गया जहाँ उसकी मौत हो गई।

केन्द्रीय बजट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विशेष सत्र आयोजित किया गया था। नए सांसदों ने शपथ ली और 27 जून को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित किया।

मु.मंत्री भजनलाल ने जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजैक्ट्स का निरीक्षण किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को हीरापुरा बस टर्मिनल (अजमेर रोड) पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मु.मंत्री ने, मानसरोवर से अजमेर रोड तक मैट्रो विस्तार के निर्माण कार्यों का भी अवलोकन कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।

- **मुख्यमंत्री ने हीरापुरा बस टर्मिनल तथा जयपुर मैट्रो फेज़ प्रथम-डी के निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।**
- **सांगानेर में, मु.मंत्री ने 300 बेड की क्षमता वाले अस्पताल का निर्माण कार्य शीर्घ करने का निर्देश दिया।**
- **मु.मंत्री आर.यू.एच.एस. भी गए तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया और वहाँ भर्ती मरीजों से भी बात की।**

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आमजन के आवागमन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का धरातल पर जायजा लेने के लिए शनिवार को जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजेक्ट्स का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों एवं व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों से चर्चा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने सबसे पहले अजमेर रोड स्थित हीरापुरा बस टर्मिनल पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से प्रोजेक्ट के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यात्रियों के लिए पेयजल की उचित व्यवस्था, बैठने हेतु छायादार स्थान, सफाई व्यवस्था सहित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए ताकि अगस्त माह से बसों का संचालन प्रारम्भ किया जा सके।

मुख्यमंत्री शर्मा ने जयपुर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम के अधिकारियों को मानसून में भारी बारिश से होने वाली समस्याओं से बचाव के लिए पूर्व में ही माकूल व्यवस्था करने के निर्देश दिए, जिससे आमजन को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। शर्मा ने मानसरोवर में जयपुर मेट्रो फेज 1-डी के तहत मानसरोवर से अजमेर रोड चौराहा तक मेट्रो विस्तार के प्रगतिरत निर्माण कार्य का अवलोकन किया।

इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए शीघ्र इस प्रोजेक्ट को पूर्ण किया जाए। उन्होंने नवनिर्मित हीरापुरा बस टर्मिनल तक मेट्रो सुविधा के विस्तार के संबंध में चर्चा की। साथ ही, मेट्रो के फेज-2 के लिए रूट निर्धारित करने तथा डीपीआर बनाने के लिए टेण्डर शीघ्र किए जाने के संबंध में निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सांगानेर में खुली जेल का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने 300 बेडेड अस्पताल बनाने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को एक सप्ताह में भूमि आवंटन की कार्यवाही पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस कार्य की शीघ्र डीपीआर तैयार करें, जिससे दीपावली से पहले निर्माण कार्य का शिलान्यास किया जा सके।

शर्मा इसके बाद राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस (आरयूएचएस) पहुंचे। यहां उन्होंने मॉडर्न डायग्नोस्टिक सेंटर, आईसीयू कॉम्प्लेक्स, आई ओटी यूनिट का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को आरयूएचएस में चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने, चिकित्सकों की नियुक्ति करने, मरीजों के परिजनों के ठहरने की उचित व्यवस्था करने के संबंध में निर्देश दिए।

राज्यपाल व विधानसभा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मीडिया हैण्डिल "एक्स" पर डाली गई एक पोस्ट में संविधान के एक प्रावधान का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि कोई विधायक, सदन का विधिवत सदस्य बनने से पूर्व शपथ अथवा प्रक्रियानुसार पुष्टि के लिए राज्यपाल या उनकी तरफ से इस कार्य के लिए नियुक्त किए गए किसी व्यक्ति के समक्ष अपनी सहमति प्रकट करता है। उन्होंने स्पीकर द्वारा दिए अन्य नियमों के हवाले भी खारिज करते हुए लिखा कि "क्या कोई भी नियम संविधान से ऊपर हो सकता है?" लेकिन राज्यपाल ने जब शपथ दिलाने अथवा यह जिम्मेदारी किसी और को देने से इंकार कर दिया था, तब पिछले हफ्ते बनर्जी और सरकार विधानसभा भवन के बाहर धरने पर बैठ गए थे।

किन्तु, राज्यपाल ने आज सुबह ही एक फरमान जारी कर डेपुटी स्पीकर को शपथ दिलाने के लिए अधिकृत किया था। हालांकि, स्पीकर ने तब तक विधानसभा का एक विशेष सत्र आयोजित करने का आदेश दे चुके थे। जिसमें यह घोषणा की गई कि सदन की कार्यवाही का संचालन सिर्फ राज्यपाल की सहमति पर ही निर्भर नहीं हो सकता। स्पीकर बिमान बनर्जी ने राष्ट्रपति की मदद भी मांगी और राज्यपाल पर अहंकारपूर्ण बर्ताव का आरोप लगाया। गतिरोध तब और गहरा गया जब राज्यपाल ने उक्त दोनों विधायकों को शपथ ग्रहण के लिए अपने आवास पर आमंत्रित किया। स्पीकर व तृणमूल ने इस बात पर जोर दिया कि बोस को विधानसभा में आना चाहिए। बनर्जी ने कहा, "हम उनका व संविधान का सम्मान करते हैं, परन्तु वे हमें आदर नहीं दे रहे हैं। उन्हें विधानसभा में आना चाहिए और शपथ ग्रहण करना चाहिए अथवा प्राधिकार अध्यक्ष को प्रदान किया जाना चाहिए। हम यहाँ संवैधानिक तौर पर बैठे हुए हैं- हम निर्वाचित हैं, आपकी तरह मनोनीत पद पर नहीं है।" शुभेन्दु अधिकारी ने कहा, इस बीच भाजपा ने भी शपथ ग्रहण समारोह की आलोचना की है उसने दावा किया कि उन्हें विशेष सत्र के बारे में नहीं कहा गया था। "मेरे पास इस संबंध में सूचना नहीं थी और कोई नोटिस भी प्राप्त नहीं हुआ था। प्रत्येक राज्य में शिष्टाचार के तौर पर विपक्ष के नेता को बुलाया जाता है परन्तु यहाँ हमसे कोई चर्चा नहीं की गई।" अधिकारी, जो पूर्व में मु.मंत्री ममता बनर्जी के खास सहयोगी रह चुके हैं वो विसं. चुनावों से ठीक कुछ सप्ताह पूर्व भाजपा में शामिल हुए थे वो अब विपक्ष के नेता हैं।

संवैधानिक कानून के जानकार विशेषज्ञों का मत है कि बंगाल के राज्यपाल संवैधानिक रूप से गलत कदम उठा रहे हैं क्योंकि वे अनावश्यक रूप से सिर्फ संकट उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। पहली बात यह है कि उन्होंने शपथ ग्रहण कराने में विलम्ब किया जबकि दोनों विधायक 5 जून को ही चुनावों में जीत चुके थे और उसके बाद यह है कि वे विधायकों को उनके निवास पर शपथ ग्रहण करने के लिए बुला रहे थे जो कि नियमानुसार नहीं है। यह बहुत ही अजीब बात है कि राज्यपाल नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलवाने के लिए उपाध्यक्ष की नियुक्ति करते हैं और अध्यक्ष को नज़रअंदाज करते हैं विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि यह सब झमेला समस्या का संकट उत्पन्न करने के लिए किया जा रहा है।

तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उपस्थिति में कांग्रेस में शामिल होने के बाद, अब पार्टी के नेता व कार्यकर्ता धीरे ही सही परन्तु कांग्रेस में आ रहे हैं। बी.आर.एस. को जोर का झटका उस समय लगा जब शुक्रवार को विधान परिषद के छः एम.एल.सी. नेताओं ने एक प्रायवेट होटल में बैठक की और कांग्रेस में सम्मिलित होने का निर्णय किया। कांग्रेसी सूत्रों के हवाले से खबर है कि "मध्य रात्रि को लगभग 1 बजे ये नेतागण तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष व मुख्यमंत्री ए.रेवन्त रेड्डी के आवास पर पहुंचे थे जो कुछ देर पूर्व ही नई दिल्ली से वापस आए थे, उनसे मिलकर इन नेताओं ने पार्टी में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की।"

रेवन्त रेड्डी ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया और सभी छः नेताओं को तेलंगाना की ए.आई.सी.सी. प्रभारी दीपा दास मुंशी, राज्य के राजस्व मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी एवं पार्टी के अन्य नेताओं की उपस्थिति में पार्टी में शामिल कर लिया। बी.आर.एस. के छः विधायकों द्वारा दलबदल कर कांग्रेस में शामिल होने के बाद 40 सदस्यीय विधान परिषद में सत्ताधारी पार्टी की सदस्य संख्या बढ़कर अब 10 हो गई है जबकि इस विपरीत बी.आर.एस. के विधायकों की संख्या 25 से ङटकर 19 रह गई है। इसके अत्तिरिक्त, इसमें चार मनोनीत एम.एल.सी. हैं जिसमें से दो सदस्य ए.आई.एम.आई.एम. से हैं तथा भाजपा एवं पी.आर.टी.यू. दोनों से एक-एक सदस्य हैं और एक निर्दलीय है जबकि दो सीट रिक्त चल रही है।

राज्य विधानसभा में, कांग्रेस पहले ही बी.आर.एस के छः एम.एल.ए. को तोड़ चुकी है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री के.टी. रामाराव ने दलबदल करवाने को लेकर कांग्रेस की आलोचना की। सोशल मीडिया एक्स पर डाली गई एक पोस्ट में के.टी.आर. ने कहा "दलबदल करना कांग्रेस के घोषणा पत्र के खिलाफ जिसने इस मामले को लेकर संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन करने का वादा किया था, जिसमें निर्वाचित सदस्यों के दलबदल कर एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने पर स्वतः अयोग्य करने की मांग की गई है। के. केशव राव ने कांग्रेस में शामिल होने के बाद राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। रामराव ने कहा कि वे इस निर्णय का स्वागत करते हैं परन्तु बी.आर.आस. के उन विधायकों का क्या होगा जिन्होंने दलबदल किया और कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था तथा उन आधा दर्जन अन्य विधायकों का क्या होगा जो दलबदल करके कांग्रेस में सम्मिलित हुए हैं?" के.टी.आर. ने यह भी पूछा और राहुल गांधी पर निशाना साधा कि क्या उन्होंने इसी तरह से संविधान को सही ठहराया है।

के.टी.आर. ने अपने एक्स पोस्ट पर पूछा "यदि आप बी.आ.एस. के विधायकों से इस्तीफा नहीं ले सकते तो आप पर देश कैसे भरोसा करेगा कि कांग्रेस के घोषणा पत्र अनुसार दसवीं अनुसूची में संशोधन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं? यह कैसा न्याय पत्र हैं?" बी.आर.एस. ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनावों में 39 सीटे जीती थी और सत्ता से बाहर हो गई। परन्तु उनकी संख्या छः विधायकों को कांग्रेस में दलबदल कर जाने के बाद कम हो गई और एक एम.एल.ए. की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। 119 सदस्यों वाली विधानसभा में जिस समय विधानसभा का गठन हुआ था कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 65 थी जो अब बढ़कर 71 हो गई है।

गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रकम मिलेगी। श्री शुभम लॉजिस्टिक ने बीकानेर में 29 गोदाम किराये पर लिए और उन्हें ए.एल.पी. के अधीन मानते हुए किराया राशि मात्र 15 प्रतिशत ही भंडारण निगम को दी, इससे विभाग को करीब 6 करोड़ रुपये की हानि हुई।

एम.ओ.यू. में एक शर्त यह भी थी कि, गोदामों में जमा स्टॉक का बीमा श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को ही करवाना था, लेकिन कंपनी ने इंश्योरेंस नहीं कराया, इस कारण करीब 3000 करोड़ रु. स्टॉक बिना किसी बीमा के रखा हुआ था। इस गंभीर लापरवाही के बावजूद कंपनी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। कंपनी द्वारा गोदामों पर स्टाफ तैनात नहीं करने के कारण सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई थी, इनके वेतन के 4 करोड़ रु. कंपनी से वसूले जाने चाहिए थे। मंत्री का आरोप है कि, वेयर हाऊस मैनेजमेंट सिस्टम के लिए डब्ल्यू.ई. एक्सेल सॉफ्टवेयर कंपनी चंडीगढ़ से 3.7 करोड़ रुपये का सॉफ्टवेयर एकल निविदा में खरीदा गया, अगर यह टैंडर खुली शर्तों में होता तो करीब 2.5 करोड़ रु. की बचत होती।

डॉ. किरोडीलाल का कहना है कि गहलोत राज में हुआ यह टैंडर शुरू से ही विवादों में रहा, क्योंकि इसकी शर्तें कुछ इस प्रकार तय की गई थी कि इन दोनों कंपनियों के अलावा कोई इस निविदा में भाग ही नहीं ले सके। हैरानी की बात यह थी कि इस टैंडर के खिलाफ राजस्थान हाईकोर्ट में भी एक याचिका दायर हुई थी, जिस पर अदालत ने टैंडर पर रोक लगा दी थी। इसके बाद तत्कालीन गहलोत सरकार व राज्य भंडारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को टैंडर देने के लिए राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी और अदालत ने कुछ समय के लिए हाईकोर्ट के आदेश पर अस्थाई रोक हटायी थी, इसी बीच विभाग ने कंपनियों के साथ अनुबंध कर लिया। आज भी इस प्रकरण पर अंतिम फैसला आना शेष है।

राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट :- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में कहा गया है कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के क्लॉज 15 में लिखा है कि अनुबंधित कंपनी को सरकार द्वारा निर्धारित गोदामों की 70 प्रतिशत की उपयोगिता सुनिश्चित करनी थी। इस रिपोर्ट में भी माना गया कि इस शर्त की पालना नहीं करने पर, जुलाई 2023 तक राज्य सरकार को इस कंपनी से 64.08 करोड़ रुपये की पेनल्टी वसूलनी जानी थी, लेकिन इस रकम में से मात्र 46.54 करोड़ रु. ही वसूले गए, जबकि 17.64 करोड़ रु. अभी भी बकाया है। खास बात यह है कि दोनों कंपनियों को भंडारण निगम को 24.34 करोड़ रु. की बैंक गारंटी देनी थी, लेकिन इन कंपनियों ने मात्र 22.20 करोड़ रु. ही जमा करवाए। जब लेखाकारों ने भंडारण निगम अधिकारियों से इस बारे में जवाब मांगा तो उन्होंने कहा कि, यह प्रकरण अदालत में आर्बिट्रेशन में है, इसका फैसला लंबित है। लेखाकारों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि, भंडारण निगम का यह जवाब स्वीकार योग्य नहीं है। उन्होंने आगे यह भी टिप्पणी की है कि, जब वर्ष 2021-22 में ही पता चल गया था कि दोनों कंपनियां गोदामों की 70 फीसदी उपयोगिता सुनिश्चित करने में फेल साबित हो ही रही तो फिर वर्ष 2022 से 2024 तक इन कंपनियों के साथ राजस्व साझा का अनुबंध जारी क्यों रखा गया?

ऑडिट रिपोर्ट की शर्त 15 में यह भी तय था कि, भंडारण निगम और श्री शुभम लॉजिस्टिक के बीच राजस्व साझेदारी क्रमशः 71:29 फीसदी की रहेगी, परन्तु यह राजस्व 15:85 के क्रम में मिला। ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि भंडारण निगम ने, श्री शुभम लॉजिस्टिक को 'एग्री लॉजिस्टिकल पार्क' (ए.एल.पी.) में 75.96 करोड़ रु. का बिजनेस दिया, इस कारण कंपनी के राजस्व का प्रतिशत 29 प्रतिशत के बजाय 85 पहुंच गया। इससे पता चलता है कि भंडारण निगम ने इन कंपनियों को जुलाई 2020 से मार्च 2023 के बीच 26.22 करोड़ का अतिरिक्त बिजनेस दिया। उल्लेखनीय है कि ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार कि गोदाम किराया, संधारण व स्टाफ वेतन का 32 प्रतिशत निगम ने दोनों कंपनियों को वसूलने दिया, जो कि करीब 49.74 करोड़ रु. की रकम थी।

जब निगम प्रशासन से लेखाकारों ने इस संदर्भ में पूछताछ की तो उन्होंने जवाब दिया कि, ए.एल.पी. में 85 प्रतिशत बिजनेस देने का फैसला बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्स की मीटिंग में लिया गया था और ऐसा वर्ष 2010 से हो रहा है। लेखाकारों ने इस जवाब को भी संतुष्टिपूर्ण नहीं माना है।

ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया कि, इन दोनों कंपनियों ने गोदामों में रखी गई कृषि उपज की एवज में 2430 करोड़ रु. का अपर्याप्त बीमा कराया, जिससे किसानों को फसल खराबे की स्थिति में भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है। जब इस मुद्दे पर लेखाकारों ने भंडारण निगम से सवाल किया तो जवाब मिला कि प्रशासन ने दोनों कंपनियों को ई-मेल लिखा है और जवाब आने पर ऑडिटर्स को बता दिया जायेगा। लेखाकारों की टिप्पणी है कि निगम प्रशासन का यह जवाब, इंश्योरेंस लागू करवाने का फैलियर साफ जाहिर करता है।

ऑडिट रिपोर्ट में सामने आया है कि, दोनों कंपनियों ने अनुबंध के मुताबिक अतिरिक्त भंडारण क्षमता को बनवाने और उपयोग की एवज में 9.41 करोड़ रु. की अतिरिक्त परफॉरमेंस सिक्यूरिटी राशि जमा नहीं करायी। लेखाकारों को इस मुद्दे पर विभाग ने जवाब दिया है कि, हमने दोनों कंपनियों को कई बार बैंक गारंटी जमा करवाने के लिए पत्र लिखे हैं, लेकिन अभी तक भी यह लंबित है और प्रक्रिया जारी है। ऑडिटर्स ने इस जवाब को भी उपयुक्त नहीं पाया है। ऑडिट रिपोर्ट में टिप्पणी की गई कि एक वर्ष बीतने के बाद भी बैंक गारंटी वसूली नहीं होना भंडारण निगम का एक बड़ा फेलियर है। ऑडिट रिपोर्ट में लिखा गया है कि, गोदामों पर सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने की एवज में कंपनियों से 4.17 करोड़ रु. का वेतन राशि वसूलने में भी भंडारण निगम फेल साबित हुआ है। इसके अलावा भी अन्य कई मदों में करीब 6 करोड़ रु. की वसूली नहीं की गई है।

दोनों कंपनियों की बैंक गारंटी उपलब्ध नहीं कराने और कृषि उपज के स्टॉक का इंश्योरेंस नहीं करवाने और टैंडर की अन्य शर्तों की पालना नहीं करने पर उठे विवाद पर राज्य भंडारण निगम ने इन कंपनियों का भुगतान रोक दिया था। इसके बाद 3 अगस्त 2023 को इन कंपनियों ने भंडारण निगम की सहमति से राजस्थान हाईकोर्ट पहुंचकर आर्बिट्रेटर की नियुक्ति करवाई।

बताया जा रहा है कि आर्बिटेटर ने फैसला दिया है कि, भंडारण निगम इन कंपनियों को भुगतान कर दे, इसके बाद कंपनियां भी अपनी शेष बैंक गारंटी विभाग को जमा करवा दें। हैरानी की बात है कि ऑडिटर्स की कड़ी टिप्पणियों के बावजूद भी राज्य भंडारण निगम ने आर्बिट्रेशन" के माध्यम से इस मामले का निपटारा क्यों करना उचित समझा। इससे भी बड़ी ताज्जुब की बात है कि, सी.ए.जी. व अन्य वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट्स में कंपनियों व भंडारण निगम की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े किए जाने के बावजूद भी आर्बिट्रेटर द्वारा इस तरह का अवॉर्ड दिया गया, जिससे प्रतीत होता है कि कंपनियों को बहाल किया जा रहा है। वर्तमान में यह प्रकरण सुप्रीम कोर्ट के समक्ष भी लंबित है। इस प्रकरण में आर्बिट्रेटर द्वारा दिए गए अवॉर्ड को भी राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है।

अमेरिका में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई। फिलाडेल्फिया, बोस्टन और कनेक्टिकट में गोलीबारी की घटनाओं में तीन लोग मारे गए। क्वींस सेक्शन में एक अपार्टमेंट में आठ साल के एक लड़के की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पिछले साल भी स्वतंत्रता दिवस के मौके पर छुट्टी के दिन गोलीबारी में एक दर्जन से ज्यादा लोग मारे गए थे।

काफी रोचक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कश्मीर भू-भाग में आती हैं। भाजपा किसी को भी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करेगी, चुनावों में प्रचार व वोट के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे का इस्तेमाल किया जाएगा।

संभावना है कि भाजपा, पूर्ववर्ती रियासत के डोगरा राजा महाराजा हरिसिंह की विरासत को मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ना चाहेगी जिन्होंने भारत संघ में शामिल होने का फैसला किया था। भजपा पार्टी के प्रचार मुद्दों की रणनीति में पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती को अनन्तनाग-राजौरी के चुनावों में हुए नुकसान को तथा अभी कुछ समय पूर्व समाप्त हुए लोकसभा चुनावों में हार के मुद्दे को भुनाना चाहती है।

भाजपा के करीबी सूत्रों का कहना है कि भाजपा चुनावों में जम्मू व कश्मीर बैंक घोटाला तथा प्रचार में रोशनी घोटाला कांड को भी उठाएगी।

अल्पसंख्यक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को 20 लाख रुपये की छात्रवृति देती है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908